चैतन्य लहरी

हिन्दी आवृत्ति
खण्ड VII अंक 7–1995

"सारा जीवन्त कार्य सर्व-शक्तिमान परमात्मा द्वारा किया जाता है। आप तो एक बीज भी अंकुरित नहीं कर सकते। अंकुरित होने के लिए बीज को पृथ्वी माँ में डालना आवश्यक है।"

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

चैतन्य लहरी

चैतन्य लहरी (1995) खण्ड VII, अंक 7

–: विषय–सूची :–

1. सत्–चित्त–आनन्द (नई दिल्ली) 15–2–1977 1
2. आदि शक्ति पूजा (जयपुर) 10–12–1994 9
3. निर्मल विद्या (राहुरी) 31–12–1980 18

सम्पादक : श्री योगी महाजन

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजयनालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली–110 067

मुद्रित : प्रिन्टेक फोटोटाईपसैटर्स,
35, ओल्ड राजेन्द्र नगर मार्केट,
नई दिल्ली–110 060
फोन : 5710529, 5784866

"सत्-चित-आनन्द"

परम पूज्य माता श्री निर्मला देवी का प्रवचन

नई दिल्ली, 15 फरवरी 1977

क्या आप सब लोग मेरी हिन्दी समझते हैं? यदि मैं अंग्रेज़ी बोलूं तो क्या आप समझ सकेंगे? मैं अंग्रेज़ी भाषा के विरुद्ध नहीं हूँ। परन्तु आत्मा की भाषा तो संस्कृत ही है। अंग्रेज़ों ने कभी आत्मा की चिन्ता नहीं की। अत: हमें वही भाषा उपयोग करनी है जो आत्मा के विषय में बोलती है, अंग्रेज़ी भाषा पर्याप्त नहीं है। अंग्रेज़ी बोलने वाले लोगों के पास अनुभव नहीं है क्योंकि अभी तक वे गहनता में नहीं उतरे। हम अत्यन्त पुरातन मानव हैं। परमात्मा के ज्ञान की खोज़ हमारी संस्कृति रही है। संस्कृत के माध्यम से ही हमें ज्ञान प्राप्ति हुई, क्योंकि संस्कृत वस्तुत: देववाणी है। इसके अतिरिक्त जब कुण्डलिनी उठती है तो यह चैतन्य लहरियाँ छोड़ती हैं। जिनसे एक विशेष प्रकार की ध्वनि निकलती है जो कि भिन्न चक्रों पर देवनागरी के रूप में प्रतिष्ठित होती है। यदि समय मिला तो इस विषय पर विस्तृत रूप से समझाऊंगी। संस्कृत भाषा या देवनागरी में उच्चारण किये गए मन्त्र चक्रों को अधिक प्रभावति करते हैं। अत: यदि आप संस्कृत नहीं सीख सकते तो भी हिन्दी भाषा तो अवश्य सीखें। ध्वनि युक्त भाषा होने के कारण हिन्दी चैतन्य स्पंदन करती है। आप यह भाषा सीखने का प्रयत्न करें। हिन्दी मेरी मातृ भाषा नहीं है, मेरी मातृ भाषा मराठी है। पर मैं हिन्दी बोलती हूँ क्योंकि मैं इसका महत्व जानती हूँ। थोड़ी बहुत अंग्रेज़ी का ज्ञान भी मुझे हैं। अत: हिन्दी का ज्ञान होना अच्छा होगा। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मराठी में बोलना मेरे लिए सुविधाजनक है। थोड़ी बहुत बंगाली भी मैं जानती हूँ। आत्मा की बात तमिल, तेलगू या इस योग भूमि की किसी अन्य भाषा में भी की जा सकती है। भारत योग का एक महान देश है। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि भारत भूमि का कण-कण चैतन्यित है। वैज्ञानिक यह सब नहीं समझ सकते। पश्चिमी मान्यताओं का अन्धानुकरण जब हम करने लगेंगे तो अपनी सारी महानता से हाथ धो बैठेगें। निसन्देह: यह नष्ट तो न होगा। परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के लिए हम इसका उपयोग भी न कर पाएंगे। अपनी महत्वपूर्ण मान्यताओं की उपेक्षा करके हम उन विदेशी मान्यताओं को स्वीकार करते हैं जो कि उतनी व्यापक नहीं है। यह समग्र नहीं हैं। सभी कुछ अपने में समेटे हुए नहीं हैं। अत: मैं आपसे प्रार्थना करुंगी कि हिन्दी भाषा भी सीखें। अंग्रेज़ी में दिये गए मेरे एक प्रवचन का मराठी अनुवाद किया गया। कितनी गरिमां थी इसमें और अंग्रेज़ी में यही प्रवचन कितना निर्जीव था! हो सकता है कि वह मेरे अंग्रेज़ी भाषा के अल्पज्ञान के कारण हो।

अब हम 'सत्-चित्-आनन्द' के विषय में बात करेंगे। यहां फिर मुझे संस्कृत शब्द उपयोग करने पड़ रहे हैं। 'सत्-चित्त-आनन्द', 'पराचेतना', सर्वव्यापक शक्ति हैं। चित्त ही चेतना है। इस समय चेतन अवस्था में आप मुझे सुन रहे हैं। हर क्षण आप चेतन हैं, परन्तु हर क्षण समाप्त हो कर भूतकाल में परिवर्तित हो रहा है। हर क्षण भविष्य से वर्तमान में आता है। परन्तु इस क्षण आप चेतन अवस्था में है और मुझे सुन रहे हैं। एक विचार उठता है और इसका पतन होता है। विचार को उठते हुए तो आप देख सकते हैं परन्तु इसके पतन को आप नहीं देख सकते। एक विचार के पतन और दूसरे विचार के उठने के मध्य कुछ अन्तराल होता है जो 'विलम्ब' कहलाता है। यदि कुछ क्षणों के लिए आप के विचार रुक सकें तो आप चेतनमन तक पहुँच जाते हैं और यहीं सत्-चित्त-आनन्द का अस्तित्व है। आप कह सकते हैं कि 'सत्-चित्त-आनन्द' मनोदशा या मनस्थिति है जहां कोई विचार नहीं होता, परन्तु आप चेतन होते हैं, 'निर्विचार'। यह प्रथम अवस्था है। जिसमें आप पराचेतना में प्रवेश करते हैं। कुछ लोग सोचेंगे कि आत्म साक्षात्कार प्राप्त करके वे भी आदि शंकराचार्य की तरह कुछ सिद्धियाँ पा लेगें, परन्तु यह सम्भव नहीं। कुछ लोग इन्हें पा भी सकते हैं। परन्तु सभी के लिए यह सम्भव नहीं। निर्विचारिता आपकी प्रथम अवस्था है। आप निर्विचार

समाधि को प्राप्त कर लेते हैं। यह तभी घटित होता है जब आपकी कुण्डलिनी आपके आज्ञाचक्र को पार कर लेती है अर्थात जब कुण्डलिनी आपके तालू क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है और आपका चित्त 'सत्' बिन्दु को छू लेता है। वास्तविकता (सत्) 'मिथ्या' से अलग हो जाती है। आप द्वि-व्यक्तित्व बन जाते हैं। इस स्थिति में आप सत्य को असत्य से अलग करने लगते हैं। जैसे दूध में चूना डाल कर दही और पानी को अलग करते हैं। इसी प्रकार वास्तविकता का आरंभ होता है। केवल इस स्थिति में आप कह सकते है कि कुण्डलिनी जागृत हो गई है। जैसे-जैसे ये घटित होता है हमें इसकी भिन्न अवस्थाओं को समझना चाहिए। मैं आपको इसकी विस्तृत जानकारी दे रही हूं। परन्तु प्राय: अधिकतर लोगों में कुण्डलिनी एकदम सहस्रार पार कर जाती है। कुछ लोगों की कुण्डलिनी एकदम सहस्रार पार नहीं करती, इसे समय लगता है। स्वाधिष्ठान या नाभि में जाकर यह लुप्त हो जाती है। इससे ऊपर नहीं जाती। कभी अनहद् चक्र इसे पकड़ लेता है और कभी यह बिल्कुल नहीं उठती। परन्तु यदि यह आज्ञा-चक्र-द्वार पार कर ले तो व्यक्ति निर्विचार समाधि में चला जाता है। इस निर्विचार समाधि द्वारा कुछ शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। उदाहरणार्थ यदि आप गवर्नर बन जाएं तो आपको गवर्नर की कुछ शक्तियां भी प्राप्त हो जाती हैं। इसी प्रकार आपको कुछ विशिष्ट शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं। परन्तु इस स्थित में कुण्डलिनी को छोड़ देना उचित नहीं क्योंकि इस स्थिति में वह इधर-उधर भटक सकती है और पराचेतन या सामूहिक अवेचतन में जा सकती है। 'सिद्धियाँ' प्राय: इसी अवस्था में प्राप्त होती हैं। छोटी-मोटी सिद्धियाँ नहीं, बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ; उदाहरणार्थ कुण्डलिनी यदि पराचेतन में चली जाए तो व्यक्ति भविष्य के गर्भ में देखने लगता है और भविष्यवक्ता बन जाता है। कुण्डलिनी यदि सामूहिक अवचेतन में चली जाए तो व्यक्ति भूतकाल को देखने लगता है। इस प्रकार का व्यक्ति यदि मेरे पास आए तो वह देख सकता है कि पूर्व जन्मों में मैं कौन थी। मुझे उसे कायल नहीं करना पड़ता। यह भूतबाधित होने जैसा ही है। नशे का आदि या मदिरा में डूबा हुआ व्यक्ति भी यदि आन्तरिक रूप से जिज्ञासु है तो वह भी मुझे भिन्न रूप में देख सकता है। वह मेरे भूतकाल को देख सकता है और मुझसे अत्यन्त प्रभावित हो सकता है। वह जान लेता है कि मैं कौन थी। ऐसे लोग सदा यही सोचते हैं कि वर्तमान से भूतकाल कहीं महान था और यद्यपि अपने पूर्वजन्मों में मैंनें किसी को आत्मसाक्षात्कार नहीं दिया फिर भी मेरा भूतकाल वास्तव में आज से कहीं अधिक महान था। सामूहिक अवचेतन में गया हुआ व्यक्ति जब वास्तविकता को इस प्रकार देखता है तो मेरी ओर अत्यन्त आकर्षित होता है। पराचेतन स्तर पर गए हुए व्यक्ति भी यदि बाईं ओर को अर्थात भूतकाल में चले जाएं तो उनके साथ भी यही घटित होता है। व्यक्ति यदि दाईं ओर को, भवष्यि में चला जाए तो वह मुझे प्रकाश के रूप में देखता है। ऐसे व्यक्ति मुझे पंच तत्वों में, झरनों के रूप में या हिम शैलों (Ice Berg) के रूप में देखते हैं। वे 'तन्मात्रा' अर्थात तत्वों के आकस्तिमक सार (Casual Essence of the Elements) को भी देखने लगते हैं। इससे उन्हें मेरे विषय में विश्वस्त होने में सहायता मिलती है क्योंकि ऐसे व्यक्ति का विश्वास मुझ पर आप लोगों से कहीं अधिक हो जाता है। बहुत से तान्त्रिक जानते हैं कि मैं कौन थी। वे मुझसे डरते हैं और मेरे विषय में बातचीत करते हैं। एक साधारण नौकरानी एक बार मेरे कार्यक्रम में आई और मूर्छा (Trance) की स्थिति में चली गई और लगी संस्कृत बोलने। पन्द्रह श्लोकों में उसने मेरा पूर्ण वर्णन किया। उसने पहली बार मेरे विषय में यह सब कहा था। इससे पूर्व मैंने स्वंय भी अपने विषय में कभी कुछ नहीं बताया था। इस प्रकार यह सब आरंभ हुआ।

अत: इस स्थिति में मैं आपकी कुण्डलिनी नहीं छोड़ना चाहूंगी क्योंकि आप लोगों को रोग-मुक्त कर सकते है। और ये कार्य आप तभी कर सकते हैं जब कुण्डलिनी तालू क्षेत्र (सहस्रार) में हो। मैं सदा उत्सुक रहती हूँ कि कुण्डलिनी ब्रह्मरन्ध्र को पार कर ले। उस स्थिति में आपको चैतन्य लहरियां आने लगती हैं। परन्तु इस स्थिति में आप 'चित्त' मात्र होते हैं और सत्य बिन्दु को केवल छू भर लेते हैं।

आत्मा केवल आपके चित्त को आर्कषित करती है। जैसा मैंने आपको बताया चित्त एक टिम-टिमाहट या गैस लैम्प के प्रकाश की तरह है और कुण्डलिनी गैस की तरह से हैं जो आत्मा को स्पंश करती है और आत्मा का प्रकाश मध्य नाड़ी तन्त्र पर फैल जाता है। 'चित्त' का बाह्य भाग

ध्यान है। उस स्थिति में कुण्डलिनी बह्मरन्ध्र को खोलती है, तब आप अपने हाथों में चैतन्य लहरियों को भी महसूस करते हैं और अन्य लोगों की चैतन्य लहरियों को भी महसूस करते हैं। तब आप 'सामूहिक चैतन' हो जाते हैं। सच्चिदानन्द से सामूहिक चेतन द्वारा आप चित्त स्पर्श करते हैं। इस प्रकार आप अपने चित्त के चित्त को सामूहिक चेतना का चित्र बनते हुए महसूस करने लगते हैं अर्थात् आप सत्-चित्त-आनन्द के सागर में उतर जाते हैं जहां आप केवल सामूहिक चेतना का अनुभव करते हैं। इसका अभिप्राय यह हुआ कि आप अन्य लोगों की कुण्डलिनी को अनुभव करने लगते हैं।

कल एक सज्जन, आपने देखा होगा, मुझसे बहस कर रहे थे कि हमारी निलम्बित बुद्धि है। परन्तु मैंने उससे मात्र इतना कहा कि, "निलम्बित बुद्धि क्या होती है? मुझे इसका कोई ज्ञान नहीं।" मैंने उसे ये बताया। वह कहने लगा कि "मैं तुर्या-स्थिति में हूं। मैंने कहा, "यदि आप तुर्या में हैं तो आप अन्य लोगों की कुण्डलिनी को अनुभव कर सकते हैं। इसके बिना आप अपनी बात को प्रमाणित नहीं कर सकते। परन्तु आप क्या अन्य लोगों की कुण्डलिनी को महसूस करते हैं? वह कहने लगा, नहीं। तब मैंने उससे पूछा, "आप तुर्या अवस्था में कैसे हो सकते हैं? यदि आप तुर्या अवस्था में जाते हैं अर्थात इस अवस्था को पार करते है। तो आपमें दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को अनुभव करने की सामर्थ्य होनी चाहिए। अब आपने देखा होगा कि यहां पर बहुत से लोग कुण्डलिनी का अनुभव कर सकते हैं और सभी एक ही बात कहते हैं। वे चाहे अंग्रेज़ी, भारतीय या किसी अन्य भाषा में बात करें, वे सभी एक ही भाषा बोलते हैं। एक ही बात वे सब कहते हैं कि फलां चक्र पकड़ रहा है। ऐसा इस लिए होता है क्योंकि आप अपनी कुण्डलिनी को देखने लगते हैं और उससे लोगों की कुण्डलिनी को भी देखने लगते हैं। अपनी अंगुलियों के माध्यम से आप जान सकते हैं कि स्थिति क्या है। आप केवल चित्त को महसूस कर सकते हैं। इसके आनन्द भाग को नहीं। पहली अवस्था में चित्त के माध्यम से आप दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को अनुभव कर सकते हैं और उसके द्वारा दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को जागृत भी कर सकते हैं। कुछ देर बाद मेरे फोटोग्राफ की सहायता से आप अन्य लोगों को आत्म-साक्षात्कार भी दे सकते हैं। परन्तु आनन्द की अवस्था तक आप अब भी नहीं पंहुचे। आरम्भ में आप अपने हाथों में केवल शीतल लहरियों का अनुभव करते हैं। शान्ति की अवस्था का अनुभव भी आप करते है। और निर्विचारिता का भी। 'निर्विचार चेतना' को आप अनुभव करते हैं परन्तु अभी तक आनन्द का अनुभव नहीं होता। मैं हज़ारों लोगों की समस्याओं का अध्ययन कर चुकी हूँ, मैं जानती हूँ कि यही सच्चाई है। परन्तु कुछ लोग अन्तिम अवस्था तक पहुँच चुके हैं यद्यपि इनकी संख्या बहुत कम है।

इस प्रकार पहली अवस्था जो आप प्राप्त करते हैं वह है 'चित्त' अवस्था, चेतनावस्था। आप 'सत्' को स्पर्श कर लेते हैं अर्थात् वास्तविकता को देखने लगते हैं। आप अपने अन्दर एक बहाव को महसूस करने लगते हैं। इस स्थिति में आप कहने लगते हैं कि यह आ रहा है, ये जा रहा है। अभी-अभी आपने कहा था कि यह आ रहा है। आपने यह नहीं कहा कि 'मैं' इसे प्राप्त कर रहा हूँ, 'मैं' दे रहा हूँ।' आपकी भाषा में 'मैं' शब्द लुप्त हो जाता है। परन्तु अभी तक अहं और प्रतिअहं पूर्णतया लुप्त नहीं हुए। वे अब भी वहीं है परन्तु अपने ध्यान से आप 'चित्त' को अनुभव करने लगे हैं। इस 'सामूहिक चेतना' से आप लोगों को रोगमुक्त कर सकते हैं, उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं और जैसा मैंने आपको बताया विश्व के किसी भी व्यक्ति की कुण्डलिनी को अनुभव कर सकते हैं और उस व्यक्ति के चक्रों के विषय में जान सकते हैं। अपने स्थान पर बैठे हुए आप दूर स्थान पर रहने वाले व्यक्ति की दशा बता सकते हैं। जहां भी आपका चित्त जाता है वहीं पर कार्य करता हैं, यह सर्वव्यापक बन जाता है। बूंद रूपी आपका चित्त 'सत्-चित्त-आनन्द' सागर में लीन हो जाता है। मेरी बात को ध्यानपूर्वक सुनें क्योंकि इस अवस्था पर पहुँचकर बहुत से लोग छोड़ जाते हैं। केवल चित्त ही प्रभावशाली बन जाता है। इंग्लैण्ड से आए अपने एक शिष्य के विषय में मैं आपको बताऊँगी। एक दिन वह बैठा हुआ अपने पिता के विषय में सोच रहा था। अचानक उसकी तर्जिनी अगुंली पर जलन होने लगी। उसने अपने पिता को फोन किया। उसकी माँ ने उसे बताया कि उसके पिता की दशा ठीक नहीं है। गले की खराबी से वह बहुत परेशान है। इस लड़के ने अपनी

अंगुली पर कुछ किया और उसका पिता ठीक हो गया। अब वह सोच सकता है कि वह बहुत शक्तिशाली हो गया है, आदि-आदि, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। वह इस प्रकार नहीं सोच सकता क्योंकि उसका सहस्रार खुल चुका है। उसने मात्र इतना कहा, "श्रीमाता जी मैंने ऐसा महसूस किया और इस प्रकार किया और मेरे पिता जी ठीक हो गए।" वह कभी नहीं कहता कि मैंनें उन्हें ठीक कर दिया। 'मैं' निकल जाता है। आप कभी नहीं कहते कि 'मैंने' यह कार्य किया, आप कहते हैं, "श्री माता जी आज मेरी आज्ञा पकड़ रही हैं" "श्री माता जी मेरा हृदय पकड़ रहा है।" वे आते हैं और अपने विषय में इसी प्रकार कहते हैं। आज्ञा पकड़ रहा है अर्थात आप पागल हो रहे हैं। परन्तु आप इसका बुरा नहीं मानते क्योंकि आप इससे लिप्त नहीं हैं। व्यक्ति अपनी आत्मा से लिप्त हो जाता है। अत: आत्मा रूप में वह कहता है कि यह चक्र पकड़ रहा है, वह चक्र पकड़ रहा है। कैंसर रोगी को अपने रोग का ज्ञान नहीं होता। परन्तु आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति का चित्त उसे बता देगा कि फला-फला चक्र खराब हैं- और इतने सारे चक्रों के खराब होनें का अर्थ है कैंसर रोग। डाक्टर के पास जाने की उसे कोई आवश्यकता नहीं, वह स्वंय इसका निदान कर सकता है। डाक्टर की तरह से वह अपना निदान नहीं करेगा कि यह हृदय का कैंसर है या गले का, परन्तु वह कहेगा कि बांई ओर के या दांई ओर के चक्र पकड़े हुए हैं।

अब यह चैतन्य लहरियां कहां से आ रही हैं और कहां तक जा रहीं हैं तथा कहां तक इन चक्रों की गहनता को बता सकते हैं? बहुत सी महत्वपूर्ण अमूर्त (Abstract) घटनाएं घटित हो रही हैं।

जब आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेते हैं तो 'चिरंजीव' आपके सम्मुख समर्पण कर देते हैं। वे आपको देखते रहते हैं। क्योंकि आपका उत्तरदायित्व अब उन पर हैं। आपके अन्दर सभी देवता जागृत हो चुके हैं। यदि आप देवताओं के विरुद्ध कोई कार्य करते हैं तो तुरन्त वे आपको दण्डित करते हैं। आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति यदि किसी अवांछित या गंदे स्थान पर जाता है, या किसी कुगुरु के पास जाता है तो तुरन्त उसको गर्मी आने लगती है। फिर भी यदि वह वहां से दौड़ नहीं जाता, इसी प्रकार चलता रहता है तो उसकी चैतन्य लहरियां समाप्त हो जाएंगी और वह एक साधारण व्यक्ति के सामान हो जाएगा।

आरम्भ में आत्म-साक्षात्कार की स्थिति अत्यन्त अस्थाई होती है। फिर भी मैं यह कहूँगी कि इसके प्रति अरुचि इतनी अधिक नहीं होती कि व्यक्ति इसे स्वीकार ही न करें। यदि आप इसे स्वीकार कर लेते है तो पूर्णत: आत्मसाक्षात्कारी बन जाते हैं। परन्तु यदि इसे स्वीकार नहीं करते तो आपको कुछ शरीरिक समस्या हो सकती हैं आपकी अंगुलियों में खराबी आ सकती हैं या शरीर के कुछ हिस्सों पर आपको जलन भी हो सकती है। इन शरीरिक समस्याओं की चिन्ता यदि आप नहीं करते तो आपका उत्थान होने लगता है और, जैसे मैंने बताया, ये सभी 'चिरंजीव' आपका पथ प्रदर्शन और देखभाल करने लगते हैं। रेलगाड़ी में यदि एक भी आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति हैं तो वह दुर्घटनाग्रस्त नहीं हो सकती और यदि किसी कारण से दुर्घटना हो जाती है तो भी उसमें किसी की मृत्यु नहीं हो सकती। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति यदि सड़क पर चल रहा हो और किसी सम्भावति दुर्घटना की ओर उसका चित्त चला जाए तो वह दुर्घटना टल जाएगी। क्योंकि उसके चित्त को आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। वैज्ञानिक इस बात को नहीं समझ सकते। अभी अभी किसी ने मुझसे पूछा, "यदि वह अन्दर के देवता उसके अन्दर का, पथ प्रदर्शन करते हैं तो वह स्वयं कुछ भी नहीं कर सकता।" यह सत्य नहीं है। अन्दर के देवता उसके अंग-प्रत्यंग हैं। आप कह सकते हैं कि मेरा पथ प्रदर्शन मेरे मस्तिष्क द्वारा होता है अत: मैं और कुछ नहीं कर सकता। आप स्वंय देख सकते हैं कि यह देवता आपके भिन्न चक्रों पर विराजमान हैं। तो अपना कहने के लिए आपके पास क्या बचा? आपका व्यक्तित्व आत्मा से जुड़ जाने पर आप निर्लिप्त हो जाते हैं और तब स्वामित्व भाव आप में समाप्त हो जाता है। हर समय आप यही कहते हैं कि "यह जा रहा है, यह घटित हो रहा है, यह प्रवाहित हो रहा है।" तृतीय पुरुष के रूप में आप स्वयं को देखने लगते हैं। अपनी आत्मा का तदात्मय आप अपने शरीर से नहीं करते, ऐसा होता है। आप इन लोगों को देखें कि ये किस प्रकार कार्यरत है।

सहजयोग में आनन्द का भी एक स्थान है। प्राय: आप देख सकते है कि सहजस्वभाव के आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति

के इर्द-गिर्द बहुत से सहजयोगी इकट्ठे हो जाते हैं। किसी महान आत्मा के मेरे चरणों में आने पर सहजयोगी अत्यन्त आनन्दित होते हैं। एक बार हम कलकत्ता के एक होटल में ठहरे हुए थे। एक सज्जन मुझे मिलने आये, वह आत्मसाक्षात्कारी तो न थे परन्तु अत्यन्त सन्त स्वभाव और महान पूर्व-सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति थे। उसने मेरे चरण स्पर्श किये। सहजयोगी दूसरे कमरों में थे। वे दौड़े हुए आए। मैंने कहा, "आप क्यों आयें हैं?" वे कहने लगे, "हमारे अन्दर आनन्द का प्रवाह एक दम बढ़ गया। अत: हम यहां आ गए हैं।" पूरा समय वह व्यक्ति मेरे चरणों में था और सहजयोगी वहां खड़े हुए थे। मैंने कहा "न यह मुझे छोड़ के जा रहा है और न ही आप लोग।" पर पन्द्रह मिनट तक वह व्यक्ति मेरे चरणामृत का आनन्द लेता रहा और वे सब उसके अमृत और सुगन्ध का आनन्द लेते रहे। अत: दूसरे व्यक्ति का आनन्द लेने से भी आनन्द प्रवाहित होने लगता है। यही भावनाएं हैं जिन से आप 'निर्विचारिता' या 'समाधि' का आनन्द लेते हैं। 'समाधि' का अर्थ अचेतन में चले जाना नहीं है। सर्वव्यापी अचेतन चेतन बन जाता है। अत: यह प्रथम अवस्था है। ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं और भिन्न घटनाएं घटित होती हैं। अपने पूर्व जन्मों में यदि आप बहुत अधिक ज्योति पूजा करते रहें हों तो आप मेरी चैतन्य लहरियों को आते जाते देख सकते हैं। यदि आप देवी पूजा करते रहे हैं तो आप 'देवी प्रमाण' का कोई कार्य कर सकते हैं और उसे देख भी सकते हैं परन्तु यदि आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने से पूर्व ही ऐसा कुछ देखते है तो आप भूतबाधित हैं, कोई आपको विचार दे रहा है। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् यदि आप कुछ देखने लगते हैं तो उसका कोई अर्थ होता है। इस प्रकार पुष्प का क्रमिक विकास प्रकट होने लगता है।

दूसरी अवस्था में आप 'निर्विकल्प' हो जाते हैं- जहां कोई विकल्प न हो। अभी तक दिल्ली में ऐसे बहुत कम सहजयोगी हैं। सर्वप्रथम तो स्वभाव से ही वे विकल्पी हैं। इसका कारण ये है कि पूरा वातावरण ही विकल्प का है। आप यदि कुछ कहें तो दूसरा व्यक्ति कोई और बात कह कर आपको पीछे को खींचेगा। इस प्रकार पूरा वातावरण ही इतना विकल्पी है कि आप अभी तक सहजयोग में जम नहीं पाये। परन्तु दिल्ली में अत्यन्त महान सहजयोगी भी मिले। अब आप पूछेंगें कि निर्विकल्प कैसे बनें? मान लो आप पानी में हैं तो आप डूबने से भयभीत हैं। यदि कोई आपको नाव में बिठा दे तो आपका डूबने का भय समाप्त हो जाता है। अब आप दृढ़ता पूर्वक जम सकते हैं।

दृढ़तापूर्वक जमने पर आपको कुछ विशिष्ट शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं- आपकी कुण्डलिनी चलने लगती है। बम्बई में कुछ लोगों की कुण्डलिनी एक फुट तक ऊंची उठती है। वे अत्यन्त विकसित लोग हैं। निर्विकल्प अवस्था में सामूहिक चेतना सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होती चली जाती है। जब वास्तविकता स्पष्ट हो जाती है तो आप चीज़ों की गहन महत्ता को समझ सकते हैं। उदाहरणार्थ आप कुण्डलिनी की कार्यशैली को समझने लगते हैं। आप समझने लगते है। कि किस प्रकार कुण्डलिनी भेदन करती है और किस प्रकार कार्यान्वन करती है। अपने हाथों से प्रयोग करने के लिए आप इसका उपयोग कर सकते हैं और इसे इच्छानुसार ला सकते हैं। आप लोगों को रोगमुक्त कर सकते हैं और भिन्न तरीकों से कुण्डलिनी की कार्यशैली दिखा सकते है।। कुण्डलिनी के प्रस्तार एवं संयोजन (Permutations & Combinations) में आप सम्मिलित हो सकते हैं। आप कह सकते हैं कि संगीत की शिक्षा के प्रथम वर्ष में आप केवल सात स्वर तथा दो अन्य स्वर और साधारण राग सीखते हैं परन्तु जब आप ऊँचे उठ कर सूक्ष्म हो जाते हैं तो आपको सारी बारीकियों का ज्ञान हो जाता है कि किस प्रकार संगीत की सृष्टि की जाए।

निर्विकल्प अवस्था में आपको किसी की ओर अपने हाथ करने की आवश्यकता नहीं करनी पड़ती। बैठते ही आप उसकी स्थिति को जान जाते हैं कि कौन सा चक्र पकड़ रहा है और समस्या क्या है। 'सामूहिक समस्या' क्या है। आपको सहजयोग कुण्डलिनी और किसी भी अन्य चीज़ के बारे में कोई सन्देह नहीं रह जाता। सन्देह पूर्णत: समाप्त हो जाते है और तब आप इस पर प्रयोग करके इसका उपयोग करते हैं। कुण्डलिनी पर अधिकार होने लगता है। तब 'चित्त', चेतना सूक्ष्म हो जाती है। मेरे पास कोई व्यक्ति बैठा हुआ था और बाहर बैठे सहजयोगी जान गए कि उस व्यक्ति को आत्म साक्षात्कार मिलने वाला है, वे

यह भी जान गए कि श्री माता जी उसे आत्म साक्षात्कार दे रही हैं। सहजयोगी ऐसे समय पर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और छोटी-छोटी बातों का गिला शिकवा नहीं करते, वे निश्चिन्त होते हैं और शान से रहते हैं। वे तुनक-मिज़ाज नहीं होते। उनका चित्त सूक्ष्म में होता है। बाहर के स्थूल पदार्थों के लिए उनके पास समय नहीं होता। अत: उनका चित्त सदा सूक्ष्म भाग की गहनता में होता है। वे चिन्ता नहीं करते। इस प्रकार के लोग अत्यन्त सन्तुष्ट होते हैं और ये ही सहजयोग के स्तम्भ बनाएंगे। जब भी कोई ऐसे परिवर्तित व्यक्ति को देखता है तो आश्चय चकित रह जाता है, "इस व्यक्ति को देखो वह कितना महान है। पहले तो वह अत्यन्त भयानक किस्म का होता था, अब इस प्रकार परिवर्तित हो गया है! देखो यह कितना बदल गया है!" निर्विकल्प अवस्था में चैतन्य लहरियां निकलती हैं और सभी प्रश्न शान्त हो जाते हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति यदि कभी किसी को मुझसे अभद्र व्यवहार करता हुआ देख ले तो वह सहन नहीं कर सकता और उसे भयानक क्रोध आ जाता है। ईसा मसीह ने कहा है, "उन सबको क्षमा कर दो क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।" परन्तु यदि उन्होंने उसकी माँ विरोधी कोई कार्य किया होता तो उसने उन्हें कभी क्षमा न किया होता। बाईबल में लिखा है- "आदि शक्ति की शान में किया गया कोई अपराध सहन नहीं किया जाएगा और आदि शक्ति (Holy Ghost) उनकी मां थी। अत: आप अपनी मां (श्री माता जी) या सहजयोग के विरुद्ध कुछ भी सहन नहीं कर सकते और व्यक्ति को भयंकर क्रोध आ जाता है या अन्तर्विकसित 'सहांर शक्ति' का भी उपयोग वह कर सकता है। कहा जाता है कि ऐसे व्यक्ति को यदि कोई हानि पहुँचानें का प्रयत्न करेगा तो अपनी मां के प्रति भक्ति के माध्यम से वह उसे पछाड़ देगा। हममें एक धारणा है कि आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को कभी क्रोध नहीं आना चाहिए। यह अत्यन्त गलत विचार है। तब तो आप यह भी कह सकते हैं, "कृष्ण ने जरासंध और कंस का वध क्यों किया?" कृष्ण की हिंसा को आप किस प्रकार उचित ठहरा सकते हैं? देवी अवतरित हुई और राक्षसों पर कुपित हो कर उनका संहार किया। उनके इस कार्य को किस प्रकार न्याय संगत ठहराते हैं? भयंकर क्रोध में आने पर वे संहार करती थी। और शिव का क्रोध! इसको आप किस प्रकार उचित ठहराते हैं? ये कहना कि चाहे कोई उनकी हत्या भी करने का प्रयत्न कर रहा हो तो भी सहजयोगियों को क्रोध नहीं आना चाहिए, अत्यन्त मूर्खता है। ईसा मसीह को भी अपने हाथ में हंटर उठा कर लोगों को भगाना पड़ा। यदि आप निर्विकल्प अवस्था में हैं तो आपको क्रुद्ध होनें और ऊँची आवाज़ में बोलनें का अधिकार दिया गया है। यदि आपने कभी मेरे हाथों की ओर ध्यान दिया हो तो आप जानते होंगे कि मैं चक्र, फर्सा आदि आयुधों का उपयोग करती हूँ। मुझे इनका उपयोग करना पड़ता है और ऐसा करने से आप मुझे रोक नहीं सकते। इसीलिए मैं कहती हूँ कि अध्ययन से लोग चीज़ों को नहीं समझते। एक व्यक्ति शान्तिपूर्वक बैठा हुआ है और सभी लोग उसे परेशान कर रहे हैं। क्या ऐसा ही व्यक्ति आत्मसाक्षात्कारी कहलाएगा! कितनी मूर्खता है? ऐसे व्यक्ति के प्रति दुर्भाव रखने की आपकी हिम्मत कैसे हुई। क्या आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति को देवी का क्रोध सहना है? तो ये कहना अनुचित है कि आत्मसाक्षात्कारी को क्रोध नहीं आना चाहिए।

सभी ऋषि जिनके विषय में मैंने बताया और वे सभी लोग जिनके नाम मैंने आपको बताएं हैं और जिन्होंने मेरे विषय में बात-चीत की हैं वे निर्विकल्प अवस्था से भी ऊपर हैं, परन्तु अत्यन्त उग्र स्वभाव के हैं। ये सन्त पाखण्ड को सहन नहीं कर सकते, परन्तु मैं कर सकती हूँ, मुझे करना पड़ता है। कोई 'राक्षस' उनके समीप नहीं जा सकता और यदि कोई जाने का दु:स्साहस करे तो फंदा डालकर उन्हें पेड़ से लटका दिया जाता है। इसीलिए मैं कहती हूँ कि 'बाबा जी' के समीप कभी मत जाओ। वे नि:सन्देह आप लोगों से ऊँचे हैं, आप सबसे अच्छे हैं, मुझे भली भाँति पहचानते हैं और मेरे चरण कमलों में गिरते हैं। मेरे लिए वे अत्यन्त अबोध और बच्चों की तरह से सहज हैं। श्री गणेश अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं। यदि वे कुपित हो जाएं तो उन्हें संभालना अत्यन्त कठिन है। श्री शिव के क्रोध को शान्त करना तो सुगम है परन्तु श्री गणेश के क्रोध को शान्त करना अत्यन्त दुर्गम है। उनसे सावधान रहें। यही कारण है कि कुण्डलिनी की जागृति के समय आपको जलन होने लगती है और नाचने और कूदने लगते हैं। यह सब श्री गणेश का क्रोध है। किसी कारण वश यदि आपने उनका या उनकी मां का अपमान किया है तो उन्हें

भयंकर क्रोध आ जाता है।

यह सत्य है कि निर्विकल्प के पश्चात श्री गणेश वास्तव में जागृत हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति किसी स्त्री के प्रति मोहित नहीं होता। अपनी पत्नी के अतिरिक्त उसे कोई स्त्री नहीं लुभा सकती और वह एक ब्रह्मचारी पति की तरह से रहे चले जाता है क्योंकि पति-पत्नी तो विवाह के सूत्र में बंधे होते हैं। अन्यथा वह एक पवित्र गृहस्थ होता है। उसे मदिरा या धूम्रपान आदि का कोई आर्कषण नहीं होता। वह सम्मोहन से परे होता है। निर्विकल्प व्यक्ति को कोई प्रलोभन नहीं हो सकता। एक व्यक्ति मेरे पास आया और कहने लगा कि वह आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति है। मैंने कहा, ''यह किस प्रकार हो सकता है? यदि आप आत्मसाक्षात्कारी हो तो इन चीज़ों की ओर तुम किस प्रकर आर्कषित हो रहे हो? आप इन की ओर आर्कषित नहीं हो सकते।'' अब मैं आपको अपनी बात बताती हूं कि ऐसा कर पाना असम्भव है। मैंने ऐसी कभी कोई चीज़ नहीं ली। एक बार मेरे डाक्टर ने दवाई के रूप में बिना बताए थोड़ी सी ब्रांडी दी, इसके कारण मुझे रक्त की बहुत सी उल्टियां हुई क्योंकि मेरा पेट ही धार्मिक एवं पवित्र हैं। किसी महिला को उत्तेजित करने वाली वेशभूषा पहने देख लूं या अपने पति के साथ मुझे किसी पार्टी में जाना पड़े, जहां कैब्रे आदि शुरु हो जाए, तो मुझे उल्टी सी आने लगती है, विशेष तौर पर उस स्थिति में जब हम वहां पर मुख्य अतिथि हों। मैं उनकी दुर्दशा कर देतीं हूँ क्योंकि इन अधनंगी स्त्रियों को देखकर मेरे पेट में कुछ होने लगता है। अपने पेट का मैं क्या करूँ क्योंकि पेट में ही धर्म उत्पन्न होता है। अत: पेट स्वयं धर्म बन जाता है। इस अवस्था में चीज़ों की सूक्ष्म शैली आरम्भ हो जाती है। आपका मूलाधार साक्षात पवित्र बन जाता है। उल्टी सीधी चीज़ों को यह सहन नहीं कर सकता। उन्हें ये सब समझाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। ऐसी स्त्रियों में उनकी कोई रुचि नहीं होती। वे प्रेम खिलवाड़ नहीं करते और न ही ऐसी चीज़ों में उनकी दिलचस्पी होती है। अन्य स्त्री या पुरुषों को लुभाने के लिए वस्त्र आदि धारण करने की वे चिन्ता नहीं करते और अत्यन्त साधारण व्यक्तियों की तरह से आचरण करते हैं। गरिमामय सादगी को वह अपना लेते हैं। अचानक वे अत्यन्त रचनात्मक बन जाते हैं। बम्बई के एक सज्जन को निर्विकल्प अवस्था प्राप्त हो गई। बेरोजगारी की स्थिति में वह मेरे पास आया। मैंने उससे कहा, ''आप आन्तरिक साज सज्जा का कार्य क्यों नहीं करते?'' उसने कहा उसे भिन्न प्रकार की लकड़ियों का ज्ञान नहीं है, वह क्या करे। मैंने कहा, ''अब आप निर्विकल्प अवस्था में हैं अत: आरम्भ कर दें।'' आज वह अत्यन्त वैभवशाली व्यक्ति है। आपमें प्रगल्भता आ जाती है क्योंकि आप प्रकृति के सौन्दर्य को देखने लगते हैं। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति में सौन्दर्य बोध उत्पन्न हो जाता है। हर चीज़ में वह सौन्दर्य देखने लगता है। बातचीत का सौन्दर्य भी बढ़ता है। हाथ हिलाने की शैली में सुधार होता है और आपकी सारी शैली सुधर जाती है। सौन्दर्य बोध आ जाता है और आप सुन्दर व्यक्ति बन जाते हैं। अचानक आप एक महा-कवि भी बन सकते हैं। हमारे यहां ऐसे दो व्यक्ति हैं जिन्होंने अति सुन्दर कविताएं लिखी हैं। यदि आप चित्रकारी करते हैं तो आप महान चित्रकार बन सकते हैं। चित्रकारी के विषय में आपको नये विचार और नया सौन्दर्य-बोध हो जाता है। संगीत को आप पूर्णत: समझने लगते हैं। चाहे आपको शास्त्रीय संगीत का ज्ञान न हो फिर भी आप सूक्ष्म संगीत को समझने लगते हैं। शास्त्रीय संगीत से आप जान पायेंगे कि आपकी आत्मा के लिए क्या सर्वश्रेष्ठ है। इस स्तर पर आत्मा हर चीज़ का निर्णय करने लगती हैं। ऐसे व्यक्ति को यदि आप नाटक या चित्रकारी के निर्णायक के रूप में पदारूढ़ कर दें तो वह इसको ठीक से जांचेगा। उसके निर्णय को विश्वभर के आलोचकों के सम्मुख रखेंगे कि यह सर्वश्रेष्ठ निर्णय है। अब आप मुझे पूछेंगे कि वह यह सब ''किस प्रकार जानता है?'' क्योंकि उसमें चैतन्य लहरियों और अन्य सभी चीज़ों के सौन्दर्य का अनुभव करने का क्षेम है।

आप उसे किसी देवता की मूर्ति दे कर पूछिये कि यह ठीक है या नहीं है तो वह कह सकता है कि ये ठीक नहीं है। आप चैतन्य लहरियों से महसूस कर सकते है। कि ये धर्म है या अधर्म। अब क्या हम कह सकते हैं कि अष्ट विनायक जीवन्त हैं या नहीं? किस प्रकार जानते हैं कि ज्योतिर्लिंग जीवन्त हैं? यह आप कैसे जानेंगे? सभी महान आत्माओं का एकीकरण किये बिना आप उन्हें किस प्रकार समझ सकते हैं? अत: आप आत्मसाक्षात्कार

अवश्य लें। मेरे पिता जी ने मुझे यही समझाया। वे आत्मसाक्षात्कारी पुरुष थे और मैं कहूंगी कि वे मेरे प्रथम गुरु थे। उन्होंने मुझे बताया कि वास्तविकताओं आदि की बात करना व्यर्थ है क्योंकि इससे तुम एक अन्य बाईबल या गीता की सृष्टि कर दोगी। इसके स्थान पर तुम व्यवहारिक कार्य करो। एक सामूहिक विधि खोज निकालो, और मैं समझ गई कि यही मेरा लक्ष्य था। अत: मैंने लोगों की कुण्डलिनी पर कार्य किया और उनकी गलतियों के प्रस्तार एवं संयोजन (Permutations & Combinations) को खोज़ निकालने का प्रयत्न किया। यह पता लगाने का प्रयत्न किया कि लोग ऐसे क्यों हैं। आप आश्चर्यचकित होंगे कि बहुत सारे लोगों को पता ही न लगा था कि वे निर्विचार अवस्था में भी हैं! वे न जानते थे कि वे इतने उच्च कोटि की आत्माएं हैं। यदि उन्हें इस बात का ज्ञान होता तो आपको बन्धन में डालने वाली बहुत सी बातें उन्होंने न बताई होतीं। उन्होंने कहा, 'सच बोलो!' कौन 'सच' बोलेगा? उन्हें यह समझ न थी कि मानव क्या है। वे अत्यन्त महान अवतरण थे और वे न जानते थे कि मनुष्य कितना चालाक है और कितना परस्पर-विरोधी। सूक्ष्म मानव स्तर पर वे न आ सके क्योंकि ऐसा करने के लिए उन्हें मानव की तरह आत्मसाक्षात्कार लेना पड़ता, जैसा मैंने लिया है। अत: मैं मनुष्य को जानती हूँ, परन्तु कुछ बातें मैं भी नहीं समझती।

जब आप निर्विकल्प अवस्था में चले जाते हैं तो 'आनन्द' आपमें स्थापित होने लगता है। किसी शहर, सुन्दर चित्र या दृश्य को देखते ही आनन्द का एक तीव्र बहाव आप में होने लगता है। यही कृपा है कि आप इसमें खो जाते हैं, मानों गंगा आपके ऊपर बह रही हो और आप गोते लगा रहें हो। आपकी चेतना ही आनन्द बन जाती है।

आपको समझ आ जाती है कि अभी तक हम 'सर्वव्यापी शक्ति' को न समझ पाये थे परन्तु अब हम उसे जान गए हैं। अपनी अंगुलियों में आते हुए हम इसे महसूस कर सकते हैं। यही वास्तविकता है। हमारे चहुं ओर चैतन्य है जो सोचता है, समझता है, व्यवस्था करता है, और हमें प्रेम करता है। इस ज्ञान को जब आप जान जाते हैं तब हृदय आनन्द को प्रवाहित करने लगता है। बाद में आप इस आनन्द में विलय प्राप्त कर लेते हैं। उस स्थिति में पूर्ण आत्मसाक्षात्कार घटित होता है। उस अवस्था को प्राप्त कर लेने पर आप सूर्य, चन्द्र तथा अन्य सभी तत्वों का संचालन कर सकते हैं। इस अवस्था से भी परे परमात्म-साक्षात्कार है। इसकी तीन अवस्थाएं हैं। अभी अभी मैंने इसके विषय में बताया था कि 'सत्-चित्त-आनन्द' अवस्था परमात्म-साक्षात्कार की वह अवस्था है जिसे प्राप्त करके गौतम बुद्ध और महावीर हमारे मस्तिष्क में स्थापित हो गए। ईसा मसीह भी यहीं हैं। ये दोनों अवतरण नहीं हैं, मानव की तरह से उत्पन्न हुए हैं। सीता की कोख से लव-कुश के रूप में वे जन्में, फिर वे बुद्ध और महावीर के रूप में जन्में और एक बार फिर आदि शक्ति उनकी मां थी। तत्पश्चात हसन-हुसैन के रूप में वे फातिमा-बी से जन्में। आपके लिए ये दोनों मील के पत्थर हैं जिनके द्वारा आप जान सकते हैं कि मानव किस ऊँचाई तक उठ सकता है। आज वे अवतरणों सम हैं। चिरंजीव, भैरव, गणेश कुछ अन्य प्रकार के व्यक्तित्व हैं। ये सब अवतरण हैं। हनुमान जी, बाद में, 'देवदूत गैब्रील' के रूप में अवतरित हुए और भैरव नाथ 'संत माइकल' के रूप में आये। नाम भिन्न हैं पर वे सब एक ही जैसे व्यक्तित्व हैं। देवी भी अवतरित हुईं। इसके विषय में कोई सन्देह नहीं। वैज्ञानिक इस बात को नहीं समझ सकेगा परन्तु सहजयोगी इस सत्य को समझ सकता है। क्योंकि वह तुरन्त अपनी चैतन्य लहरियों को महसूस कर सकता है और प्रश्न पूछ सकता है। मेरे विषय में भी आप प्रश्न पूछ सकते हैं। ऐसा करने पर आपको चैतन्य लहरियां प्राप्त होगीं। इसके लिए आपके देवताओं को जागृत हो कर 'हाँ' कहनी होगी। आपको आत्मसाक्षात्कार हो या न हो परन्तु उत्तर आपको अवश्य मिल जाएगा।

परमात्मा आपको धन्य करें।

आदि शक्ति पूजा

आज हम लोग आदि शक्ति का पूजन करना चाहते हैं जिसमें सब कुछ आ गया। बहुत से लोगों ने आदि शक्ति का नाम भी नहीं सुना है। हम लोग शक्ति के पुजारी हैं। धर्मी और विशेषकर राजे-महाराजे सभी शक्ति की पूजा करते हैं। सब की अपनी-अपनी देवियाँ हैं और उन सब देवियों के नाम अलग-अलग हैं। और यहाँ कि देवी का नाम भी अलग है-गणगौर। लेकिन आदि शक्ति का एक बार अवतरण इस राजस्थान में हुआ था जो वो सती देवी के रूप में प्रकट हुईं। उनका बड़ा उपकार है जो राजस्थान में अब भी अपनी संस्कृति, स्त्रीधर्म, पति का धर्म, पत्नी का धर्म, राजधर्म हर एक तरह के धर्म को उनकी शक्ति ने प्लावित किया, उसका पोषण किया। सती देवी की गाथा आप सब जानते हैं मुझे नये तरीके से बताने की ज़रूरत नहीं क्योंकि वो स्वयं गणगौर थी। उनका विवाह कर दिया गया। विवाह करके जब वो जा रही थी तब कुछ गुण्डों ने घेर लिया और उनके पति को भी मार दिया। तब पालकी से बाहर आकर उन्होंने अपना रूप प्रकट किया और सबका सर्वनाश कर दिया और खुद भी अपना देह त्याग दिया। इसमें जो विशेष चीज़ जानने की है कि बचपन से लेकर शादी तक किसी भी हालत में उन्होंने अपना स्वरूप किसी को बताया नहीं क्योंकि वो महामाया स्वरूप थी। आदि शक्ति को महामाया स्वरूप होना ज़रूरी है क्योंकि सारा ही शक्ति का इसमें समन्वय हो, प्रकाश हो और हर तरह से जो सभी शक्तियों की अधिकारिणी हों उसे महामाया का ही स्वरूप लेना पड़ता है। उसका कारण यह है कि जो प्रचण्ड शक्तियाँ इस स्वरूप में संसार में आती हैं। वो पहले सुरभी के रूप में इस संसार में आई थी, वो एक गाय थी उसमें सारे ही देवी देवता बसे थे। उसके बाद एक बार सिर्फ एक रानी सती के रूप में इस राजस्थान में आईं और मैंने आपसे बताया कि मेरा संबंध इस राजस्थान से बहुत पुराना है क्योंकि हमारे पूर्वज राजस्थान के चितौड़ गढ़ के सिसोदिया वंश के थे। आदिशक्ति की अनन्त शक्तियाँ हैं। और ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो उनमें न थी, लेकिन उन शक्तियों को छुपा कर रखना पड़ता है। उसके दो कारण है। एक तो यह गर लोग जान जायें कि यह आदि शक्ति है तो हर प्रकार के लोग उन पर प्रहार कर सकते हैं क्योंकि ये लोग सब बिल्कुल दुष्ट हैं, जाहिल हैं, और परमात्मा के विरोध में खड़े हैं। परमात्मा के नाम पर पैसा कमाते हैं और उसका दुरुपयोग करते हैं। ये सारे ही लोग गर जान जायें कि आदि शक्ति इस संसार में हैं तो या तो भाग खड़े होंगे या एकजुट होकर ये कोशिश करेंगे कि किसी तरह आदि शक्ति का कार्य इस कलियुग में न हो पाये। इसलिए ज़रूरी है कि महामाया का रूप ले लिया जाये। दूसरा इस स्वरूप में एक बड़ा गहरा सूक्ष्म काम करना है जो कभी भी किसी ने आज तक नहीं किया। वो है सामूहिक चेतना। सामूहिक तो छोड़िये एक ही आदमी को पार कराने में लोगों को सालों साल लग जाते हैं। इस कार्य को करना है और वो भी बखूबी इस तरीके से कि किसी को कोई भी हानि न पहुँचे। ऐसे हो जैसे नाव में बैठा करके आराम से दूसरे किनारे पहुँचाया जाये।

मैंने कल अपने भाषण में बताया था कि धर्म कितना विपरीत हो गया है। धर्म को समझे बिना लोगों ने भ्रान्ति की सृष्टि कर दी। गर कोई आदमी सोचने लग जाये अपने धर्म के बारे में तो वो भाग खड़ा हो जाये क्योंकि धर्म के नाम के पीछे जो जो तौर तरीके हैं वो बड़े भयंकर है क्योंकि कहीं स्त्रियों की अवहेलना, कहीं बच्चों का दमन तो कहीं लूटमार। हर तरह के गलत काम लोग धर्म के नाम पर करते हैं। एक बार बम्बई में बहुत सी गीता छपकर के बाहर से आई तो लोग बड़े खुश हुए कि हमारी गीता अब लंदन में भी छप गई, हिन्दुस्तानी तो वैसे ही अंग्रेज़ के पैर पर लोटता रहा। अब गीता वहाँ छप गई तो हिन्दुस्तानियों ने सोचा कि वाह-वाह कमाल हो गया। पर एक कोई थे कस्टम आफ़िसर। उनके दिमाग में आया कि आज तक कोई अंग्रेज़ सीधी-साधी हमारी हिन्दी भाषा

नहीं बोल सकता तो यह कौन माई का लाल निकला है जिसने गीता को लिखा है संस्कृत में। तो उन्होंने एक किताब को खोलकर देखा तो उसमें शराब। समझ गया सारी किताबों में शराब और ऊपर से गीता। तो मतलब ये कि गीता बहुत ऊँची चीज़ है। हिन्दुस्तानी गीता का नाम लेते ही, चाहे वो कुछ जाने या न जाने, माथे लगा लेते हैं। लेकिन उसमें शराब! मतलब इस तरह से छुपाने की शक्ति वो कमाल की कि गीता को इस्तेमाल करो। सो ऐब छुपाने की भी हमारे महामाया शक्ति में भी एक बहुत बड़ी खूबी है। ये लोग कहाँ से तो सीख के आये होंगे चाहे हमने नहीं सिखाया हो किसी ने तो इनको सिखाया है कि ये ऐब अपने कैसे छिपाये जायें और छिपाकर उसको किसी तरह पचा लिया जाये। जो हमारे ऐब हैं उनको हटाने के लिये हम प्रयत्नशील नहीं होगें, उसको छिपाने में प्रयत्नशील होते हैं। अब दूसरों के ऐब देखने में हम बड़े होशियार होते हैं। अब ये बिल्कुल विपरीत बात है। महामाया की शक्ति इसलिए बनी और अवतरित हुई कि आपके शरीर में जो दोष हैं उनको निकाला जाये और अपने शरीर की सफ़ाई करें। ये कार्य बड़ा कठिन है, ऐसा शुरु-शुरु में मुझे लगता था। पर ऐसे कोई खास लोग मेरे पास आये नहीं कि मुझे बड़ा दुख उठाना पड़ता। सही बात तो यह है कि वो लोग मुझे देखते ही भाग जाते होंगे शायद। इसलिए ये मेरे सामने कभी प्रश्न खड़ा नहीं हुआ। पर आश्चर्य की बात है कि जो लोग भूत से ग्रसित हैं या जो लोग हमेशा बुरे काम करते हैं और जो लोग गुरुघंटाल हैं वो लोग मुझे अच्छी तरह जानते हैं। न जाने कैसे? सहजयोगी मुझे नहीं पहचान पाते, हो सकता है कि उनकी आँखे चकाचौंध हो जाती हैं। पर आप किसी भी भूत ग्रस्त आदमी को ले आइये तो वो थर-थर काँपने लगेगा और ऐसा भागेगा कि आप सोचेंगे इसे किसी ने हंटर मारा है। लेकिन सहजयोगियों का ऐसा नहीं है। लेकिन उनको पहचान भी उतनी नहीं है। अच्छी बात है। लेकिन आदि शक्ति का एक स्वरूप जो महाकाली है उसे आप देख लें तो वो बड़ा भयंकर है। ये देख सकते हैं बाकी किसी को दिखाना बड़ी कठिन बात है। लेकिन महाकाली का स्वरूप होना बहुत ज़रूरी है। जब तक महाकाली प्रकट नहीं होती आपके अंदर बसी हुई बाईं ओर की पकड़ जा नहीं सकती। बाईं ओर की पकड़ का क्या मतलब है? सबसे पहले तो आप अपने भूतकाल के बारे में सोचते रहते हैं। दूसरी बात कि मेरे बाप ये थे मेरे बाप के बाप ये थे, ये सोचते रहते हैं। नसीब हैं उनका, उनको पूर्व जन्म याद नहीं आता। पर पूछेंगे ज़रूर, ''माँ मै पूर्वजन्म में कौन था?'' एक साहब ने मुझे बहुत तंग किया मैं पूर्व जन्म में कौन था, कौन था। मैंने कहा देखो बेटे में तुमको नहीं बता रही हूँ इसका मतलब कुछ गड़बड़ी है। क्यों मुझसे पूछ रहे हो? इस जन्म में अच्छा है कि तुम मेरे साथ हो। क्यों मुझसे बार-बार पूछ रहे हो कि मैं पूर्व-जन्म में कौन था? उससे तुम्हारा क्या लाभ होने वाला है? ''नहीं माँ मुझे अच्छा लगेगा''। अच्छा मैंने कहा कि तुम पूर्वजन्म में जयपुर के महाराजा थे समझ लो। तो तुमको गद्दी मिल जायेगी वहाँ? जाओ तो भगा देंगे सब। तो पूर्वजन्म की बात क्यों करते हो। क्योंकि मुझे एक ज्योतिषी ने बताया था कि मैं पूर्वजन्म में कहीं का राजा था। मैंने कहा वो लक्षण तो दिखते नहीं तुम्हारे अंदर राजा वाले। अब तुमको उस ज्योतिषी ने बताया तो उसने तुमको गले का कुछ कण्ठा वण्ठा दिया होगा पैसे ऐंठने के लिये। कहने लगे माता जी आप मज़ाक कर रहे हैं मैंने कहा बेवकूफ़ी की बात कर रहे हो। यहाँ तुम अपना पूर्वजन्म पूछने के लिये आये हो, मैं क्या ज्योतिषशास्त्र जानती हूँ? मुझे इसमें कोई भी, किसी भी तरह की दिलचस्पी नहीं। ऐसे लोगों को ठीक करने के लिए महाकाली स्वरूप आवश्यक है। महाकाली के स्वरूप के सिवाए ऐसे पागल छूट नहीं सकते। झूठे गुरुओं की पकड़ से लोगों को मुक्त करने के लिए भी महाकाली की ज़रूरत है। ऐसे झूठे गुरु एक तरह से अपना और अपने शिष्यों का भी नाश करते रहते हैं। लेकिन यहाँ देखते है कि नाश हो रहा है तब भी वहीं चले जा रहे हैं। उन्हीं के चरणों में ही चले जा रहे हैं। हमारे यहाँ एक साहब पुलिस के साथ आये (मैं शायद अशोका होटल में थी) तो मेरे पति ने कहा ये क्या झगड़ा है, पुलिस क्यों आई है? मैंने कहा पता नहीं देखें तो सही। तो उन्होंने कहा कि ये महाशय (नाम नहीं बताऊँगी) जो हैं ये डाक्टर साहब हैं और ये भागे हुये हैं आनन्द मार्ग से। कहने लगे माँ आपको आश्चर्य होगा कि ये आनंद मार्ग के बड़े भारी प्रचारक थे। दुनिया भर में घूमे, खूब पैसा कमाया। फिर इनके गुरु जो थे वो इनको अपना अहं शिष्य मानते थे। ये कलकत्ते में देवी के मंदिर में गये जहाँ बकरा काटा जाता है। बकरा इसलिए काटते हैं कि देवी के सामने उसके अंदर भूत डाला जाता है, और जो

भूत ग्रस्त हैं उनको भूत से छुटकारा दिलाया जाता है। हम लोग तो नींबू पर ही उतार देते हैं, शाकाहारी है अपना सब काम क्योंकि बहुत से बनिये आ गये हें ना सहजयोग में। सो नींबू को काटकर के निकल जाता है भाग जाता है। तो ये जो भूतग्रस्त लोग हैं इनके भूतों को महाकाली दिखाई देती है। वही रूप दिखाई देते हैं। और थर-थर काँपते हैं ऐसे। और आश्चर्य मुझे लगता है कि अगर अहँ का भूत लग जाये उनको तो महाकाली का रूप दिखाई देता है। एक बार एक पूजा हो रही थी। वहाँ कुछ लोगों ने कहा कि माता जी तो ब्राह्मण नहीं हैं तो हमारे यहाँ तो प्रोग्राम नहीं हो सकता, जो ब्राह्मण होगा वही आयेगा। तो वहां के जो कार्यकर्त्ता थे कहने लगे अच्छा ठीक है हम पेपर में दे देते हैं, माता जी ब्राह्मण नहीं हैं प्रोग्राम नहीं होगा। मुझे पता लगा तो मैंने कहा कि आप में जो कोई ब्राह्मण हैं मेरी तरफ हाथ करें। अब लगे उनके हाथ हिलने। अरे माँ बन्द करो! आप शक्ति हैं, हम मान गये। उनको बड़ा घमंड था कि वो बहुत बड़े ब्राह्मण हैं। तो कहने लगे माँ देखो उधर भी कुछ ब्राह्मण बैठे हैं, उनके भी हाथ हिल रहे हैं। मैंने कहा जरा उनसे पूछिये कि वो लोग ब्राह्मण हैं? अरे नहीं बाबा हम लोग कोई ब्राह्मण नहीं हैं। हम लोग प्रमाणित पागल हैं, ठाणे से आये हैं। अब इनकी आँखे खुली। मैंने कहा समझ गये आप, वो भी पागल और आप भी पागल। दोनों ही पागल। शुरुआत में तो बहुत ज़्यादा महाकाली का प्रताप। कुछ समझ में ही नहीं आता था कि ये महाकाली जी अब प्रताप कुछ कम करें तो मैं दूसरे भी काम करूँ।

अब मनोदैहिक (Psychosomatic) कैंसर, मांसपेशियों के रोगी आ गए हैं। ये वो दुनिया भर की बीमारियाँ हैं, जो डाक्टर लोग ठीक नहीं कर सकते। पर मानेंगे नहीं डाक्टर, मानते नहीं। जब तक रोगी मर नहीं जायेगा खींचो पैसा। एक साहब गुर्दा विशेषज्ञ थे उनको गुर्दा रोग हो गया। मैंने कहा मैं आपका गुर्दा ठीक कर दूँगी, एक शर्त पे कि आप अपना धंधा बंद कर दीजिए। डायालिसिस देना बंद आप करो तो मैं तैयार हूँ। हाँ-हाँ माँ आप मेरा गुर्दा ठीक करो। ठीक कर दिया। पर दो महीने बाद फिर चालू उनकी दुकान। फिर उनको गुर्दा रोग हो गया, तो मेरे पास आये। बड़ा बुरा उनका हाल। मैंने कहा इस बार क्या बात है कहने लगे फिर से गुर्दा रोग है। मैंने कहा वो नहीं अब कैंसर चल पड़ा है। घबराये बहुत। मैंने कहा मेरे रोकने पर भी आपने फिर से चालू कर दी अपनी दुकान। माँ मैं पेट कैसे भरूँगा? मैंने इतनी मंहगी मशीन मंगवाई है। ये कर रहा हूँ वो कर रहा हूँ। मैंने कहा बेच डालो किसी को। खत्म करो। सुना है वो चल बसे हैं महाराज! तो सारी जितनी बाईं ओर की बीमारियाँ हैं मनोदैहिक जिसे कहते हैं, जिसका कोई इलाज नहीं है वो महालक्ष्मी की कृपा से ही ठीक हो सकती है। इसलिए महालक्ष्मी का ही मंत्र लेना होगा और महालक्ष्मी को जब तक आप प्रकटित नहीं करियेगा ये बीमारियाँ ठीक नहीं हो सकती। और इतनी गर्मी इन लोगों से निकलती है कि समझ में नहीं आता। इधर गर्मी निकलती है उधर वो रोते रहते हैं हर वक्त। क्योंकि इसके साथ रोना चलता है। महालक्ष्मी के दर्शन हों तो रोना रुके। उनको महासरस्वती के दर्शन दूर रहे, ये तो महाकाली के दर्शन करते हैं, उनको देखकर रोना ही आता है। उनको कहें क्या? सूक्ष्म रूप से आप देखिये महालक्ष्मी का रूप, अति रौद्रा। अतिरौद्रा, अति सौम्या। पर महालक्ष्मी अति रौद्रा। रुद्र स्वरूप और वो रुद्र स्वरूप बहुत ज़रुरी है नहीं तो ये बाधाएं भागने वाली नहीं। ये सिर्फ रुद्र स्वरूप से ही भागती हैं। एकादश रुद्र में जो ग्यारह रुद्र हैं वो ग्यारह ही रुद्र में महाकाली की ही शक्ति विराजमान हैं और वो हमारे मेधा में यहाँ ग्यारह चक्रों में समाई हुई हैं। गर किसी का एकादश पकड़ गया तो समझ लीजिये उसको तो कैंसर या कोई न कोई बाईं ओर का भयंकर ला-इलाज़ रोग हो गया।

सहजयोग का विज्ञान जो है वो पूरी तरह से उत्तम है। उसमें आप कोई दोष नहीं निकाल सकते। अब लोग आये कैंसर, ऐडस, साइरोसिस और पचासों बीमारियां लेकर। अब कहने लगे माँ हम तो कभी किसी गुरु के पास गये नहीं। अरे भई तुम गुरु के पास नहीं गये तुम्हारी माँ गई होगी तुम्हारे बाप गये होगें। नहीं वो भी नहीं। रजनीश की किताबें पढ़ी थी और सत्य साईं बाबा का फोटो हमारे घर में है। और एक दो जोड़ लो, मैंने कहा, और दो चार बिमारी आ जायेंगी फिर आना। वहां जायेंगे बिमारियाँ पकड़ेंगे और यहां आयेंगे। तो उन पर देवी का रुद्र स्वरूप दिखना चाहिए ना। क्या भूतों से कहा जाये आ भई बैठ, अच्छा तू खाना खा पानी पी। मेरे से बहुत लोग पूछते हैं। माँ देवी का रुद्र स्वरूप कैसे हो सकता है? गर वो

माँ है तो माँ का स्वरूप रुद्र कैसे हो सकता है। बच्चों को ठीक करने के लिये रुद्रस्वरूप भी धारण करना पड़ता है। उसके बिना वो ठीक ही नहीं हो सकते। किंतु रुद्र स्वरूप ने किसी को हानि नहीं पहुँचाई, ये विशेष बात है। जैसे कि पहले महाकाली ने इसको मारा, उसको मारा, इसकी जीभ खींची, ऐसा कुछ नहीं। यह सब करने की कोई ज़रूरत नहीं। मनुष्य ऐसे ही घबराकर ठीक हो जाता है। उस स्वरूप को देखते ही वो ठीक हो जाता है। और जब वो उस स्वरूप को देखता है अपने आप उसकी बिमारियाँ ठीक हो जाती हैं। क्योंकि उसके अंदर जो बाधाएं है वो भाग जाती हैं। तो किसी की गर्दन काटने की, जीभ काटने की या आँख निकालने की कोई ज़रूरत नहीं है। महाकाली का स्वरूप अगर कलियुग में न इस्तेमाल किया जाये तो सहजयोग का कार्य न हो सकेगा क्योंकि इन असुरी शक्तियों के कारण सारे चक्र पकड़ में आ जाते हैं और चक्र ठीक किये बगैर कुण्डलिनी चढ़ेगी नहीं। इसलिए महाकाली का स्वरूप बहुत वंदनीय है, सराहनीय है। यह किसी को शरीरिक, मानसिक, बौद्धिक, किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाती। उसके स्वरूप से सभी बुराइयां भाग जाती हैं।

अब मियाँ-बीवी के झगड़े सबसे बड़ी समस्या हैं आजकल। क्योंकि बीबियाँ पढ़ गईं और मियाँ चाहते हैं कि बीबी बिल्कुल देहाती हो। वो देहाती तो है नहीं, उसको देहाती कैसे बनायेंगे? एक बार शहरी हो गई तो शहरी हो गई। चाहे आप लंहगा पहन लीजिए चाहे आप पैंट पहन लीजिए। दिमाग़ तो शहरी हो गया। अब जो शहरी दिमाग़ हो गये तो उसके बाद जो स्त्रीत्व है वो तो कम हो ही जाता है, पुरुषत्व ज़्यादा आ जाता है। स्त्रीत्व कम हो जाता है। और स्त्री का जो सबसे बड़ा गुण है, शालीनता वो ही खत्म हो जाता है। शालीनता स्त्री का स्वरूप है, उसे रणांगन में जाने की ज़रूरत नहीं। पदमिनी ने तीन हज़ार औरतों के साथ चितौड़ गढ़ के किले में ही स्वयं को जला दिया था। वो कहीं तलवार लेकर बाहर नहीं गईं। पर जब ज़रूरत पड़ी तो झांसी की रानी हाथ में तलवार लेकर खड़ी हुई। तब, मुझे याद है, अंग्रेज़ों ने कहा था हमारी विजय तो हुई है पर गौरव झांसी की रानी का है। अपने देश में अनेक तरह की उज्जवल चरित्र वाली औरतें हुई। पति परायण स्त्री धर्म में अत्यंत उच्च। ऐसी औरतें हो गईं जिन्होंने अपनी सूझबूझ से अपना घर संभाला। जब गांधी जी ने ललकारा तब औरतों ने अपनी चूड़ियाँ, सब जेवर उनको दे दिये। राणा प्रताप का ही किस्सा है कि राणा प्रताप नें देखा कि उसकी लड़की की घास की बनाई रोटी तक को एक बिलाव उठाकर ले गया। उनके मन में एक शंका हुई कि मैं क्यों ऐसा कर रहा हूँ अपने अंहकार के लिए। मैं अकबर की शरण क्यों नहीं जाता? जब वो चिट्ठी लिखने बैठे अकबर को तो उस वक्त क्षत्राणी उनकी पत्नी की शक्ति जागृत हुई। हाथ में भाला लेकर उसने अपनी लड़की पर ताना और कहा मैं तुम्हीं को ही मार डालूंगी। जिससे ये जो कमज़ोरी इनके अंदर आई है न आये। तब राणा प्रताप की आँख खुली। हमारे यहाँ औरतों ने रणांगन में अपने पतियों को टीका लगाकर लड़ने भेजा है। इन अंग्रेज़ों से कौन लड़े? आदमी लड़ने को कहने मात्र को है, पर वास्तविक शक्ति औरतों की थी। पर आजकल औरतें भी अशक्त हो गई हैं और आदमी निशक्त हो गये हैं। ये शक्ति जो है यह स्त्री की शालीनता से होती है। और जब तक यह शालीनता स्त्री में कार्यान्वित नहीं होती तब तक गृहलक्ष्मी की शक्ति उसके अन्दर प्रकटित नहीं होती। लेकिन चतुर होना चाहिए। गृहलक्ष्मी को चतुर होना चाहिए। दूसरे उसमें सूझबूझ होनी चाहिए। सो ये कहें कि जब महाकाली शक्ति अत्यंत शांत हो जाती है तो वो गृहलक्ष्मी हो जाती है। तो हम फातिमां बी को मानते हैं कि वो गृहलक्ष्मी के सिंहासन को सुशोभित करती हैं। महाकाली की इस शक्ति से स्त्री अपने बच्चे को ठीक रास्ते पर रखती है, अपने चरित्र को उज्जवल रखती है। और हम लोग इस चीज़ के साक्षी हैं कि एक पतिव्रता स्त्री के पतिव्रत को कोई नष्ट नहीं कर सकता। उसकी अपनी शक्ति है। ये महाकाली की शक्ति है जो लोग डरते हैं एक पतिव्रता स्त्री से। और पतियों को भी जान लेना चाहिए कि उनके अंदर जो भी कार्यशक्ति है वो भी स्त्री से ही आती है। शालीन स्त्री में हास्य रस बहुत प्रस्फुटित होना चाहिए। किस चीज़ को वो हँसी में टाल दें, और हँसकर के हज़ारों प्रश्न वो ठीक कर सकती है। ये जो बारीकी होती है उसको समझने के लिए मैंने अभी किसी को कहा था कि आप शरत्चन्द्र पढ़िये। हम लोगों को पोलिटिक्स में जाने की ज़रूरत नहीं और गंदे अर्थशास्त्र में तो जाने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं। लेकिन समाज की सारी धुरी, समाज का सारा कार्य स्त्री पर निर्भर है। जो

स्त्री अपने बच्चों को अच्छा बनाती है, अपने घर को अच्छा बनाती है, अपने पति को अच्छा स्वास्थ्य देती है वो स्त्री एक बहुत बलिष्ठ समाज बनाती है। यह शक्ति उसकी शालीनता में है उद्दामता में नहीं। उसकी चाल-ढाल उसका ढंग एक देवी स्वरूप होना चाहिए।

सो महाकाली शक्ति तो अनेक चीज़ों पर बैठती है। उसके अपने-अपने वाहन हैं। लेकिन वो जब हाथी पर बैठती है तो उसे ललिता गौरी कहते हैं। कला, हाव-भाव उसके सब बहुत इज्जतदार, सुन्दर होते हैं। ज़रूरी नहीं कि घूंघट करें, ज़रूरी नहीं कि सिर ढके, लेकिन आंखों में शालीनता होनी चाहिए। शालीन बहुत बड़ा शब्द है इसमें बहुत सी चीज़े समाई हैं क्योंकि जो रुद्र स्वरूपा है उस रुद्र स्वरूपा को सौम्य स्वरूपा होना है। इसलिए कहा है कि आप घूंघट ले लो, सिर ढक लो, बुरका ले लो क्योंकि आप महाकाली हैं। जो आप को बुरी निगाह से देख ले वहीं भस्म हो जाये। आप के संरक्षण के लिये नहीं, आप की सुरक्षा के लिए नहीं, लेकिन वो दूसरे के लिए। जो आप पर बुरी निगाह डाले वो भस्म हो जाये। वो नष्ट हो जायें। ऐसी ही ये महाकाली की महान शक्ति है। दिखने में तो बहुत ही उज्जवल बहुत ही शालीन, अंदर से उसकी शक्ति जो है वो अंदर से कार्यान्वित होती है। तो महाकाली को तो लोग कहते हैं कि ये बड़ी रुद्र शक्ति हैं माँ किन्तु इसकी शालीनता देखने पर आश्चर्य होता है कि क्या ये महामाया हैं। हैं तो महाकाली और इतनी शालीन जैसे नववधू। वाह-वाह क्या कहने इसके। ऐसी शरमायेगी, ऐसे मीठे बोल बोलेगी जैसे फूल झड़ रहे हों, ऐसे प्यार करेगी कि विश्वास ही नहीं होगा। ये महाकाली की शक्ति है। इसको जिसने पा लिया उसको कोई भूत नहीं छू सकता। उसको क्या छूएगा, वो ही भूत को पकड़ेगा। अपने यहाँ हैं दो चार ऐसे। और जो स्त्री ऐसी हो वह अपनी एक नज़र से लोगों को भस्म कर सकती है।

अब दूसरी शक्ति महासरस्वती की। जिससे कि हमारी बुद्धि में अनेक तरह के कलात्मक और विचारक प्रकाश आते हैं। सरस्वती की कृपा से, शारदा की कृपा से, हमारे अंदर अनेक विचार बड़े सुंदर, बड़े शांत, बहुत शीतल, बहुत कविताएं आती हैं। पर रोने गाने वाली नहीं। ऐसी आती हैं जिसमें आप जागरूक हों। बड़े-बड़े राष्ट्रीय गीत लिखे गये देश के लिये। लोगों ने न जाने क्या-क्या लिखा। अब वे सब तो चले गये अब ये गंदे फिल्मी गाने बजते रहते हैं गणेश जी के सामने। क्योंकि सुबुद्धि ही नहीं है मनुष्य में। सुबुद्धि नहीं है तो बेकार के काम करते रहते हैं। बुद्धि से कुछ भी निकाल लेते हैं। इसमें सबसे बड़े हैं ये फ्रायड। इन जैसा तो कोई मैंने देखा नहीं। निसंकोच उन्होंने अपने विचार सबके सामने रख दिये और सबने उनको मान लिया। और मैं यहाँ नहीं बताऊँगी वो क्या है उसके गंदे-गंदे विचार। वो तो अच्छा है वो हिन्दुस्तान नहीं आया, वरना उसको काटकर लोग फेंक देते। और उस आदमी का लिखना आप उसकी एक लाइन पढ़िये तो आप जान जायेंगे कि बड़ा ही बेशर्म आदमी है, या भूत है, या राक्षस है। जो भी है। ये उसने अपनी लेखनी का और बुद्धि का उपयोग किया। शारदा के विरोध में सब लिखा। अब सब जगह शुरु हो गई कि साहब हमें तो छूट है, हम जो चाहे लिखें। आजकल के अख़बार वाले भी वैसे ही हैं। उनके भी जो ऊटपटांग समझ में आती है वो लिख देते हैं। कोई अच्छी बात तो लिखना ही नहीं चाहते। कौन मर गया, कितने मर गये, अभी कोई मर रहा है। भई मर जाने दो काहे को रोज-रोज सबको सताते हो। वो मरता ही नहीं। रोज-रोज इतना सारा लिखते हो। एक बार मरने के बाद इत्मीनान से लिखो, मरने वाला तो है ही। अब क्यों रोज-रोज ये सब बातें लिखो। महा झूठ जो होते हैं वो लिखेंगे। डर नहीं उनको शारदा देवी का। शारदा देवी जो हैं सत्य को देने वाली और सत्य की अधिशासी। जो अपने मस्तिष्क में सत्य का प्रकाश आता है वो भी शारदा देवी की कृपा से। तो आप जब लिखते हैं तो आप सोचते नहीं कि आप के अंदर ये लेखन शक्ति कहाँ से आई। ये किसने आपको लेखन शक्ति दी? शारदा देवी ने या किसी भूतनी ने आपको दी? इसी प्रकार मैंने देखा कि बहुतों ने इतनी ऊंटपटांग कुण्डलिनी के बारे में बातें लिखीं। एक अरविन्दो साहब हैं, उसमें अर्थ ही नहीं, पता नहीं वो क्या लिखते हैं? बड़ा उनका नाम है। अरबिन्दो मार्ग, मैं कभी उस मार्ग से नहीं जाती क्योंकि पता नहीं ये कहाँ चला जाये। जहाँ उसकी खोपड़ी गई वहीं लिखता गया, लिखता गया। और कुछ भी उसमें बात सत्य नहीं। और उनकी जो वो थी उनसे भी क्या उनका रिश्ता रहा मुझे नहीं पता। वो जो माता जी थी, वो पचासो तो उनके मुँह पर सिकुड़न पड़ी हुई, और कहें ये जवान होने वाली

हैं। अभी देखियेगा जवान होंगी। वो मर गई गाड़ दिया पर जवान तो वो हुई नहीं। और उनकी किताबों पर किताब। ऊँटपटांग ऐसी किताब। ऐसे धर्म पर न जाने कितने लोग लिखते हैं। अभी एक साहब लिखते हैं कि कृष्ण शूद्र धर्मी थे। ये शूद्र थे, काले थे और राम ब्राह्मण धर्म के थे। इसलिए इनको शूद्र मानते हैं और उनको ब्राह्मण मानते हैं। मैंने कहा अच्छा ये कौन से शास्त्र में लिखा है? सच बात बताऊँ कि जवाहर लाल नेहरु जी ने जो किताब लिखी है वो खोज (Discovery) किसी और चीज़ की होगी भारत (India) की खोज़ (Discovery) नहीं है। इतनी ओछी किताब। ये हिन्दुस्तान की बात लिख रहे हैं कोई गहराई नहीं उनमें। दुष्ट लोगों ने बाइबल और कुरान को भी बिगाड़ने में कसर न छोड़ी। शारदा देवी की कृपा से बहुतों ने बहुत कुछ लिखा। ज्ञानेश्वर जी ने ज्ञानेश्वरी लिखी और उसके बाद एक और किताब इतनी सुन्दर कि ऐसा लगता है कि आप अमृत पी रहे हैं। संतों ने लिखा जिन पर शारदा की कृपा हुई। ज्ञानेश्वरी की शुरुआत में शारदा देवी की कृपा से वो लिखते कि मेरे वचन, जो भी मैं कह रहा हूँ, ये बात मैं शारदा देवी को प्रसन्न करने के लिये कह रहा हूँ। लेकिन ये शब्द किसी भी तरह से आपको दुख नहीं पहुँचायेंगे। जिस तरह से पखुंड़ियाँ धीरे से ज़मीन पर आकर बिछ जाती है उसी तरह से मेरे भी शब्द आपके हृदय पर गिरें और आपको सुगंधित कर दें। इतनी सुन्दर कविता और इतना सौम्य, उसका स्वरूप ऐसा लगता है कि जैसे आप अमृत का रसपान कर रहे हैं। अब इसलिए नहीं कि मैं मराठी भाषा जानती हूँ। अंग्रेज़ी में एक बड़े कवि हो गये और उनकी कविताएँ हम लोगों ने Vision नाम की किताब में दी हैं आप पढ़िये। उनका नाम था विलियम ब्लेक और इतनी जोशीली कविताएँ लिखते हैं कि आपके अंदर जोश आ जायेगा। शारदा जी से उनकी कविताओं में से निकलकर आपके अंदर घुस गई। वैसे ही शरतचद्र आप पढ़िये तो आप कहानी लिखना शुरु कर देगें। ऐसे-ऐसे लेखक अपने यहाँ हो गये इस भारत-वर्ष में कि ऐसे कहीं भी नहीं। टालस्टाय हो गये। मैं मानती हूँ पर उनसे भी बढ़कर शरत्चन्द्र। महाराष्ट्र में तो बहुत ही ज़्यादा हैं, एक से एक। उनके नाम बताने से कोई लाभ नहीं। लेकिन उनको अनुवाद ही नहीं किया किसी ने क्योंकि ये सब मामला राजनीतिक है। ये राजनीतिक क्या है? शारदा देवी क्या राजनीतिज्ञ हैं? दक्षिण में कुरु करके एक कवि हैं, उनकी कविताएं इतनी सुन्दर हैं कि मैं आपको बता नहीं सकती। शारदा देवी की अत्यंत कृपा अपने देश पर है। सब से बढ़िया लेखक अपने देश में हुए। ये पाश्चात्य नहीं असली हिन्दुस्तानी भारतीय लोग। उनके पास पैसा नहीं है पर सरस्वती की बड़ी कृपा है। अब राजस्थान पर बड़ी कृपा रही यहाँ बड़े-बड़े कवि हो गये। सिंकदर भी यहाँ कि संस्कृति देखकर अचम्भे में पड़ गये तो नमस्कार करके वापस चले गये। फिर सूफियों में खुसरो आये। क्या कविताएँ लिखी? कबीर दास, नानक साहब का तो कहना ही क्या? वो तो गुरु ही थे। रामदास स्वामी। बंगाल में भी क्या एक से एक कवि हो गये और ये सब शारदा देवी की कृपा से। सारे शब्दों से मानो धर्म बहता हो, प्रकाश बहता हो और सारे ही इनके शब्द व्यवस्थित हैं। ऐसा लगता है कि निर्विचारिता में लिखे हैं इन्होंने। इतने शुद्ध वर्णन हैं ये! हम ज़रूर कहेंगे कि सबसे ज़्यादा संस्कृत में फिर उसके बाद मराठी में ही आध्यत्मिक किताबें लिखी गई हैं। बड़ी गहराई से अध्यात्म पर काम किया गया है। अब कोई कहे कि अंग्रेज़ी भाषा में भी इतना लिखा जाता है माँ तो वहाँ क्या शारदा का आर्शीवाद नहीं। अब यही सोचिये कि अंग्रेज़ी भाषा में आत्मा के लिये Spirit शब्द, शराब को भी Spirit शब्द और भूत को भी Spirit शब्द। ये कोई भाषा हुई। ये शारदा देवी की कृपा से ऐसी भाषा लिखी और फ्रैंच भाषा तो उससे भी गई बीती एकदम। उसमें चेतना के लिये कोई शब्द नहीं। अंग्रेज़ी में कम से कम awareness तो है। उसमें awareness के लिये कोई शब्द नहीं आत्मा के लिए जितने दारू पर शब्द हैं लगा दीजिए।

ये क्या उन पर आशीर्वाद हुआ। ये बड़े-बड़े लेखक हो गए। सब जो भी लेखक वहाँ हुए हैं राजकारणी लोग राजकारण पर लिख गए हैं, हाँ विलियम ब्लेक की बात हम कहेंगे, सी.एस. लुइस भी वहां के महान हैं। रोनी-धोनी कविताएं क्या शारदा देवी के आशीर्वाद में से होती हैं? या फिर शराब के गुणगान करते रहेंगे। ये सिर्फ लोगों को मूर्ख बनाने के लिऐ हैं। मैं तो शीघ्र कवि हूँ मैंने कहा। अपने देश में बहुत सस्ते टाइप के कवि भी पैदा हुए और विशेषकर वो कवि जो कि भगवान् को सब चीज़ में घसीटते हैं और परमात्मा को मनुष्य के जैसा दिखाते हैं ये तो महापाप हैं और उन पर शारदा देवी की जो भी कृपा है वो महाकाली के दरवाज़े में जाने वाली है।

माने विद्यापति साहब देख लीजिए। अब राधा और कृष्ण का पता नहीं क्या श्रृंगार करें? सारे विश्व की जिसको चिन्ता है और राधा, 'रा' माने शक्ति, 'धा' माने धारण करने वाली। उसको क्या ये सब दुनिया भर का रोमांस करने की फुरसत है? अब डाल दिया उनको रोमांस में। यहाँ तब कि वाजिद अली साहब जिनकी एक सौ पैंसठ बीबियाँ थी तो भी वो साड़ी पहन कर राधा बनते थे और कृष्ण के साथ नाचते थे। अब जो ये रोमांटिक पना जो है इसमें कोई अर्थ नहीं। बेकार की बातें है। साधु संतो को इससे क्या मतलब। तो शारदा जी जो हैं वो भी कभी-कभी महामाया स्वरूप हो जाती हैं जैसे ज़ैन, के जो कवि लिखते हैं उन्हें कोई नहीं समझ सकता। वो एक सहजयोगी समझ सकता है। उनकी संवदेना सिर्फ योगीजन ही जान सकते हैं। और कोई नहीं। अब कव्वाली में लोग मुजरा गाते हैं और मुजरे में कव्वाली। ये कोई शारदा देवी का आशीर्वाद है किसी भी तरह से? संगीत में भी शुद्धता होनी चाहिए। वर्तमान काल में कुछ ऐसा लगता है कि शारदा देवी ने अपना हाथ कुछ रोक लिया है। इस राजस्थान में जो कला का प्रार्दुभाव हुआ है मैं देखती हूं कि दो तीन साल में ही एक दम कला फूट पड़ी है ये बिल्कुल शारदा देवी का ही आशीर्वाद है इसमें कोई शक नहीं। ऐसी-ऐसी नक्काशियाँ, ऐसी-ऐसी चीज़ें बनाने लग गये हैं लोग हाथ से। पहले भी यहाँ बड़ी अच्छी नक्काशियाँ होती थी, लोग तराशते थे। पर अब सारे मिट्टी के बर्तनों में देख लीजिए, कहीं देख लीजिये क्या सुन्दर-सुन्दर रंग, बढ़िया, ऐसी रंग-बिरंगी, ऐसी चीज़ें। पश्चिमी लोगों में ऐसी कला कहाँ? उनके हृदय और दिमाग़ में ताल-मेल ही नहीं है। परन्तु राजस्थान में सफाई का बहुत कम ख्याल है। औरतें बहुत साफ हैं, घर वगैरह बहुत साफ रखती हैं, पर बाहर बहुत गंदगी है। आदमी लोगों को कोई मतलब ही नहीं है यहाँ। सब कूड़ा बाहर फिंकता है, पर परदेश में बाहर साफ है क्योंकि आदमी लोग खुद साफ करते हैं। यहाँ आदमी लोग हाथ में झाड़ू लेकर साफ करेंगे? तो सफाई और व्यवस्थिता भी शारदा देवी का ही आशीर्वाद है। बाहर की सफाई रखना हमें अंग्रेज़ों से सीखना चाहिए। ये गंदगी जो है ये शारदा देवी को पास में नहीं आने देगी। वो हट ही जायेंगी। बहुत ज़रूरी है, सफाई करनी चाहिए और सफाई भी सुचारू रूप से कलात्मक होनी चाहिए। यहाँ तो बहुत ही कला का प्रादुर्भाव है। फिर भी यहां गरीबी है। टर्की के लोग बड़े कलात्मक है। मेरी अक्ल में नहीं आया कि इतने कलात्मक लोग हैं फिर भी इनमें इतनी गरीबी क्यों आ गई? आखिर पता हुआ कि वे जर्मन लोगों से बड़े प्रभावित हैं। टर्की का खाना बहुत अच्छा है फिर भी वे जर्मन खाना खाएंगे। इतना अच्छा वहाँ खाना मिलता है कि परदेश से लोग वहाँ आकर खाना खाते हैं पर आपको हैरानी होगी कि ये टर्किश लोग जर्मनी से, खाना मंगाकर खाते हैं और कपड़े सिलते हैं, उन्हें जर्मनी भेजते हैं, वही कपड़े फिर वहाँ से आयात होते हैं। अपने यहाँ भी काफ़ी है ये बीमारी विदेशी चीज़ों की। अपने देश में जो चीज़ें बनती है उसके क्या कहने। टर्की में जो (Pottery) चीनी के बर्तन बनते हैं आपको दुनिया में ऐसे चीनी के बर्तन कहीं नहीं मिलेंगे। चीन से भी बढ़िया। लेकिन वे जर्मन डिनर सैट में खाना खाते हैं, तो आप गरीब नहीं होंगे तो क्या होंगे। कहने लगे हम तो बड़े ग़रीब हो गये। मैंने कहा जाओ अब जर्मनी में जाकर भीख माँगो। तो शारदा देवी की जिस देश पर इतनी कृपा है उनको क्या ज़रूरत है परदेशी चीज़ों को इस्तेमाल करने की। इस कदर हम अंग्रेज़ होने की कोशिश कर रहे हैं कि गणपति पुले में बड़े मुश्किल से भारतीयों के लिए व विदेशियों के लिये अलग-अलग गुसल बनाये। भारतीयों के लिए भारतीय ढंग के और विदेशियों के लिये विदेशी ढंग के। तो भारतीयों ने कहा कि हमें तो वैसे ही अंग्रेज़ी ढंग के चाहिए माँ। मैंने कहा अच्छा। विदेशी बहुत खुश हुए हिन्दुस्तानी ढंग के पाकर, Mother very clean, Mother very clean वो बहुत खुश हुये। लेकिन हिन्दुस्तानियों को तो अटैच (attached) चाहिए। पहले जाते थे जंगलो में, अब जुड़े हुए (attached) चाहिएं। इतनी अंग्रेजियत हमारे अंदर आ गई। बहरहाल इसमें भी हर्ज नहीं। बेचारे वहाँ के नेता साहब आये बोले, माँ मै क्या करूँ? मैंने जो अंग्रेज़ों के लिए बनाया उनको वो पसंद नहीं, जो हिन्दुस्तानियों के लिए बनाया उनको वो पसंद नहीं। मैंने कहा अंग्रेज़ों की जगह हिन्दुस्तानियों को रख दो और हिन्दुस्तानियों की जगह अंग्रेज़ों को रख दो। खत्म काम। समाधान तो निकल आया पर मेरे दिमाग़ में ये बात आयी कि जो जंगलों में जाते थे वे बड़े अच्छे थे। ये अहदीपने का लक्षण है। हाँ बुड्ढे लोग मेरी समझ में आते हैं लेकिन जवान लोगों को अहदीपने

की कहां से बात चलती है? वो तो विदेशी चीज़ है। कम से कम औरतों में थोड़ी अक्ल आ गई। कम से कम हिन्दुस्तान की औरतों ने तो अपना तरीका नहीं छोड़ा, बहुत सी औरतों ने। जिस दिन औरत ने अपनी शालीनता छोड़ दी उसी दिन उसके अन्दर से जितना कुछ शुद्ध कला का स्वरूप है, या स्त्री का स्वरूप, पत्नी का स्वरूप, माता का स्वरूप, सब खत्म हो जायेगा। ये शारदा देवी की कृपा में रहने वाले सब लोगों को पता होना चाहिए। आप जो भी कुछ करते हैं उसमें दिखावे की कोई ज़रूरत नहीं। आप जो कुछ भी करते हैं, पहनते हैं, ओढ़ते हैं अगर आपको शारदा देवी की पूर्ण मेहरबानी चाहिए तो दूसरों के लिए करिये अपने लिए नहीं। सारी चीज़ में शारदा देवी का एक आवरण होना चाहिए। संगीत आपको मालूम होना चाहिए चाहे देहात का हो। आपको शारदा देवी की शरण में रहना है तो अपने गाँव में, अपने देश में जो कुछ होता है और जो कुछ आज तक उन्होंने बनाया है, कलाकारों ने, उनकी इज्जत करिये। अजन्ता नहीं देखी पर स्विटजरलैण्ड ज़रूर जायेंगे। अजन्ता जैसी चीज़ स्विटजरलैंड के नाना के बाबा के दादा के कोई नहीं बना सकता। स्विटजरलैण्ड में देखने का क्या है? पत्थर! हम तो स्विटजरलैण्ड गये थे। अजन्ता नहीं देखी आबू नहीं देखे। जो अपने देश के बारे में जानेंगा ही नहीं वो इस देश को प्यार कैसे करेगा। और जब कला चारों तरफ से इस देश में बह रही हो! सो कला की तरफ रुचि रखना और अपने देश की कला को पहले अपनाना चाहिए। शारदा देवी की कृपा आपके इस भारतवर्ष पर बहुत है। और क्योंकि पाकिस्तान और बांगलादेश भी इसी देश का भाग हैं। वहाँ पर भी है पर धीरे-धीरे हट जायेगी। आजकल तो वहाँ सब लोग एक दूसरे को पत्थर ही मार रहे हैं। कुछ लोग औरतों को जमीन में गाड़ कर मार रहे हैं। कुछ लोग करांची में कल देखा मैने पत्थरों पर पत्थर मार रहे हैं। वहाँ कला क्या चीज़ है? सो इस भारतवर्ष पर जो देवी की कृपा है, उसे आप अपनी नज़रों से देखिये। उसको समझिए, उसका आनन्द उठाइये।

फिर नाट्य कला। बँगाल में और महाराष्ट्र में नाट्य कला बहुत ऊँची है। लोग सिनेमा नहीं जाते नाटक में जाते हैं। महाराष्ट्र के लोग आप जितने अमीर नहीं है पर पाँच रुपये का टिकट हो या सात रुपये का टिकट हो वह जाकर नाटक देखते हैं। जिसमें नाट्य कला हो। पहले सिनेमा बहुत अच्छे होते थे, लेकिन अब सिनेमा तो गड़बड़ा गये। अब नाटक भी गड़बड़ा जाये तो न जाने क्या-क्या चीज़ें हो जायें। कुछ-कुछ ऐसी अजीब-अजीब चीज़ें देखने में आई हैं कि लगता है कि शारदा देवी यहाँ से भाग खड़ी हो जाये। उनका मान तो छोड़ो उनका बिल्कुल अपमान लोग करते हैं। इतनी विचित्र चीज़ें मैंने मंच पर भारत में देखी फिर मुझे आश्चर्य लगता है कि अभी तक चल कैसे रहा है। अब उन्होंने कहा है कि फिल्मों में से निकाल देंगे (हमें) ये और वो। हमारे जीते-जी कभी हम देख लें ये सब गन्दगी निकल जाये तो बड़ा आनन्द आयेगा। तो भारत की जो कला है वो सुधर जायेगी। जैसे आप चीनी कला देखिये तो सींग जैसे भूत के जैसे। और मिश्र की कला देखिये तो सब dead मृत जैसे उनके mummies बनायेंगे। कहीं कुछ बनायेंगे। आदमी ऐसे बनायेंगे जैसे कोई लाश खड़ी कर दी। पहले इंगलैंड, अमेरिका में भी कला ठीक थी जब तक वास्तवकि बनाते रहे। फिर impressionistic बनाते रहे तब तक भी ठीक थी पर अब जो वहाँ आधुनिक कला बन गई है। ये आपके, मेरे और किसी भी इंसान के बस की नहीं है। ऐसी विकृति आ गई है कि लगता है कि शारदा देवी वहाँ से भाग गई है। इन देशों से। और जितनी गन्दी, और जितनी अधर्मी और जितनी उल्टी-सीधी पिक्चर बनेगी उतना ही उसका दाम लगेगा। सिनेमा में शारदा का बड़ा अपमान किया है। आप सब सहजयोगियों को कला की समझ होनी चाहिए और कलात्मक चीज़ें इस्तेमाल करें, खासकर हाथ से बनी हुई, तो यह पर्यावरण समस्या ही खत्म हो जाये। अपने घर में दो सुन्दर चीज़ें होना अच्छा है बनिस्बत पच्चीस प्लास्टिक की चीज़ें होने से और चालीस पेपर प्लेट। ये अपने भारत की संस्कृति के रोम-रोम में शारदा का प्रकाश है। औरतों ने इसे बचाये रखा अब आदमियों को भी चाहिए। इसे समझें। लेकिन हिन्दुस्तान में ऐसे बहुत से लोग हैं जो चार रंग से ज़्यादा पाँचवां रंग नहीं जानते। सो वो सूक्ष्म दृष्टि भी अपने अंदर आनी चाहिए। नाट्य कला में, हर चीज़ में, नृत्य में, हर चीज़ में। अब ये नहीं कि आदमी औरतों जैसे नाचें, ये नहीं। लेकिन आदमी-आदमी जैसे औरतें-औरतों जैसी। उसके शुद्ध स्वरूप में उतरें। शारदा जी की कृपा तो है ही संगीत में, नृत्य में, सब जगह। हमने बहुत बार देखा है कि लोग जब

हमारे सामने बजाते हैं तो बड़ी जल्दी उनका नाम चढ़ जाता है बहुत नाम होता है बहुत अच्छा बजाते हैं। शारदा जी की कृपा हो गई उन पर। लेकिन आप को सुनकर आश्चर्य होगा कि जैसा हमारे देश का संगीत और नृत्य है ऐसा कहीं भी दुनिया में नहीं है, कहीं भी।

अब तीसरी जो शक्ति है त्रिगुणात्मिक वो महालक्ष्मी की शक्ति है अब लक्ष्मी जी की पूजा तो अभी करके आये हैं टर्की में। वहाँ गरीबी आ गई इसलिए। पर जब तक वो जर्मनी से सामान मंगवाना बंद नहीं करेंगे। तब तक उनकी गरीबी जाने वाले नहीं। कहने लगे हमें उसी का स्वाद लग गया है। मैंने कहा वाह-भाई अब भूखे मरोगे तो क्या होगा? तो वहाँ मैंने सोचा लक्ष्मी जी की पूजा हो जाये तो अच्छा। दीवाली वहीं हुई। अब महालक्ष्मी की जो पूजा है यह सिर्फ साधकों के लिऐ है। जब लक्ष्मी जी का पूरी तरह से उपभोग ले लिया और बहुत हो गई लक्ष्मी, जैसे बुद्ध को हुआ था, महावीर को हुआ था, तो विरक्ती आ गई और विरक्ती आने के बाद में वो परमात्मा को खोजने निकले। ये जो खोजने की शक्ति है ये महालक्ष्मी शक्ति है। अब महालक्ष्मी का मन्दिर है अपने कोल्हापुर में। तो वहाँ जोगवा गाते हैं। हे अम्बे तू जाग, हे अम्बे तू जाग। नामदेव जी ने लिखा सोलहवीं शताब्दी में। वहाँ के ब्राह्मणों से मैंने कहा ये क्यों अम्बे गाते हो महालक्ष्मी के मन्दिर में अम्बा जी का? कहने लगे पता नहीं, अनादि काल से चला आ रहा है ये गाना। जब से नामदेव हुए हैं। तो अम्बा कौन है? कहने लगे देवी है ना अम्बा भी? मैंने कहा आपको इतना ही मालूम है। मैंने कहा आपको तो मैं नहीं समझा पाऊँगी ये बड़ा मुश्किल है। फिर महालक्ष्मी के मंदिर में ही अम्बा जाग गई वो कैसे? मध्य मार्ग जो अपना है वो है महालक्ष्मी का। उस मार्ग में आप की सारी खोज बाएं की दाएं की, बुद्धि की सब खत्म हो जाती है और आप मध्य मार्ग में आ गये। जब आपने खोजना शुरु कर दिया फिर आप पर महालक्ष्मी की कृपा होती है। और इसे बाइबल में Redeemer कहा है। तीन शक्तियां बताई उन्होंने

(1) Comfortor, Left Side (2) Councillor Right Side और बीच वाली को (Redeemer)। ये Holyghost आदिशक्ति की तीन शक्तियाँ है। सो जो मध्य मार्ग में जब आप प्रवेश करने लगते हैं और मध्य मार्ग में आ जाते हैं तब आप एक साधक हो गये, साधक के ऊपर महालक्ष्मी उमड़ पड़ती हैं। महालक्ष्मी की कृपा उस पर आ गई, महालक्ष्मी की शक्ति चढ़ना बहुत मुश्किल है क्योंकि कभी मन बायें को जाता है कभी मन दायें को जाता है। एक मात्र कुण्डलिनी के जागरण से ही मध्य मार्ग आप नाप सकते हैं। पहले तो एक सोपान ब्रिज बनाते हैं भवसागर Void पर। और उससे गुजर करके ये कुण्डलिनी शक्ति मध्य मार्ग से ब्रह्मरंध्र को छेदती हुई ब्रह्माण्ड में एकाकारिता प्राप्त करती है। और जब ये घटना हो जाती है उसके बाद त्रिगुणत्मिका मिलकर के आपकी मदद करती है। आज्ञाचक्र को छेद कर जब आप सहस्रार में आते हैं तो यहाँ आदिशक्ति का स्वरूप (महामाया स्वरूप) 'सहस्रारे महामाया'। जब सहस्रार को तोड़ने का काम है वो महामाया स्वरूप है। और वो स्वरूप बड़ा छिपा हुआ है और जैसे-जैसे उसे जानने का प्रयत्न करते हैं तो वैसे वैसे आप सूक्ष्म से सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम हो जाते हैं और ये सूक्ष्मता अत्यंत आवश्यक है। हमारे अंदर जो कुछ भी गौरवशाली, विशेष धर्म है उसको जानने के लिए सूक्ष्मता चाहिए। उसमें सिर्फ एक बाधा आती है, वो है बायें और दायें की खींच। इसलिए हम आपसे हमेशा कहते हैं अपने को आप प्रत्यक्ष कर के आत्म निरीक्षण करो। अपने को दूसरों को नहीं। धीरे-धीरे ये होने से आप सहज में स्थापित हो जाते हैं। आप चक्रों के बारे में जान सकते हैं, आप महाकाली शक्ति के बारे में जान जाते हैं। मैंने आप को बता दिया महासरस्वती के बारे में और महालक्ष्मी के बारे में मैंने बहुत बार बताया। ये सब बताना रह जाता है। जब तक साधक उस स्थिति को प्राप्त नहीं कर लेता उसे चैन नहीं। लेकिन स्थिति को प्राप्त होने पर भी उसको इस्तेमाल नहीं करता तो यह विश्वास पक्का नहीं बनता और निर्विकल्प में उतरना मुश्किल हो जाता है। आज का प्रवचन कुछ ज्यादा हो गया क्योंकि विषय ही कुछ ऐसा है। लेकिन इनसे परे आदि शक्ति। और उनका वर्णन करना कोई आसान नहीं। बड़ी विचित्र चीज़ है। उनका वर्णन करना तो कठिन काम है। आप ही लोग उनका वर्णन कर सकते हैं मैं तो नहीं। ये आप पर छोड़ देते हैं।

"सब को मेरा अनन्त आशीर्वाद।"

"निर्मल विद्या"

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

राहुरी 31-12-1980

"यह एक विशिष्ट शक्ति है जिसके द्वारा हम सभी दिव्य कार्य करते हैं, यहां तक कि क्षमा भी इसी का वरदान है।" जब आप कहते है।, "श्री माता जी हमें क्षमा कर दें।" तो जिस तकनीक से मैं क्षमा प्रदान करती हूँ वह निर्मल विद्या है। किस तकनीक से मैं आपको प्रेम करती हूँ वह भी निर्मल विद्या है। जिस तकनीक द्वारा सभी मन्त्र स्वयं सिद्ध एवं प्रभावशाली हो रहे हैं, वह निर्मल विद्या है। निर्मल अर्थात पवित्र, विद्या अर्थात ज्ञान। तो निर्मल विद्या पवित्र ज्ञान है या इस तकनीक का ज्ञान है। यह छल्लों की सृष्टि करती है, उर्जा छल्ले तथा भिन्न प्रकार की आकृतियां बनाती है। जिसके द्वारा यह कार्य करती है और सभी अवांछित और अपवित्र तत्वों को अपनी ओर खींचती है तथा इनमें अपनी शक्ति संचारित करती है। इस दिव्य तकनीक का वर्णन मैं पूरी तरह से आपके सम्मुख न कर सकूंगी क्योंकि आपका शरीर तन्त्र यह कार्य नहीं करता-अभी तक आपके पास वांछित रूप से परिपक्व यन्त्र नहीं है।

परन्तु अब आप इसे देखें कि यह कितनी सूक्ष्म है। "निर्मल विद्या", उच्चारण मात्र से (निर्मल विद्या को मंत्र लेने से) आप उस शक्ति को आमंन्त्रित करते हैं, पूरी तकनीक को आप अपनी देखभाल करने के लिए आमंन्त्रित करते हैं और यह वास्तव में आपकी देखभाल करती है। आपको कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ती। विश्व में कहीं भी, किसी भी सरकार में कभी ऐसा नहीं होता कि आह्वान मात्र से पूरा तंन्त्र, पूरा ब्रह्माण्ड, सारी सृष्टि गतिशील हो उठे। यही तकनीक निर्मल विद्या के नाम से जानी जाती है। इसके प्रति समर्पित हो कर यदि हम इसमें निपुणता प्राप्त कर लें तो यह पूर्णत: हमारी आज्ञा पालन करती है। परन्तु यह गणेश-शक्ति है, अबोधिता की शक्ति-यही शक्ति अबोधिता कहलाती है, सम्पूर्ण शक्ति, क्योंकि यह अबोधिता है। अत: अबोधिता बागडोर सम्भाल लेती है और सभी कार्य करती है। तो इस प्रकार यह कार्यान्वित होती है।

यह उन्नत होती चली जाती है और पराशक्ति कहलाती है, अर्थात शक्ति से परे। तत्पश्चात् यह 'मध्यमा' बन जाती है, आदि आदि। बाईं ओर यह विशुद्धि तक पहुंचती है जहां आप दोषभाव ग्रस्त होते हैं। दोषी स्वभाव के कारण आप कठोर बातें कहते हैं। बांई विशुद्धि की पकड़ गणेश शक्ति की पकड़ है। गणेश, सोची जा सकने वाली, मधुरतम चीज़ हैं। गणेश जी की ओर देखते ही यह कौतुक, यह पवित्र श्रद्धा बहने लगती है। उनके विषय में सोचें, आपको बहुत प्रसन्नता होगी। बांई विशुद्धि को पकड़ के कारण अबोधिता कठोर हो जाती है। अत: बांई विशुद्धि की पकड़ से छुटकारा पाने के लिए आप सबको मधुर शब्द बोलने होंगे। सभी के प्रति आपकी भाषा अत्यन्त मधुर होनी चाहिए। पुरुष विशेषत: अपनी पत्नियों से मधुरता पूर्वक बात-चीत करें और यह मधुरता आपकी बांई विशुद्धि को ठीक करेगी। सदा मधुर वाणी बोलें, मधुर-मधुर शब्दों को खोजते रहें। मधुर सम्बोधन दोष भाव को ठीक करने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है, क्योंकि यदि आप किसी से कठोर शब्द कहते हैं, चाहे आप आदतवश ऐसा करते हों या ऐसा करने से आपको प्रसन्नता प्राप्त होती हो, तो तुरन्त ही आप कह उठते हैं, हे परमात्मा, यह मैंने क्या कहा! यह बहुत बड़ा दोष है। व्यक्ति को सदा मधुर शब्द खोज़ निकालने चाहिए। अब पक्षी चहचहा रहे हैं। इसी प्रकार आपको सभी स्वर सीखने चाहिएं जिनके द्वारा आप अपनी मधुरता से सभी को प्रसन्न कर सकें। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अन्यथा यदि आपकी बांई विशुद्धि की पकड़ बहुत अधिक बढ़ गई तो आप में बातचीत करने की एक ऐसी शैली विकसित हो जाएगी कि आपके होंठ बाईं ओर को खिंच कर विकृत हो जाएंगे। तत्पश्चात चैतन्य का बहाव ऊपर की ओर आज्ञा चक्र में चलता है। जहां गणेश शक्ति महानतम क्षमा-शक्ति बन जाती है। तब यह ऊपर तालू क्षेत्र में पहुँचती है जहां गणेश शक्ति सूर्य से ऊँची उठ जाती है। जब प्रति-अहँम् उभरता है तो यह चन्द्र शक्ति होती है और यह चन्द्र आत्मा है, तब यह शक्ति आत्मा बन कर सदा शिव के सिर पर विराजमान होती है। गणेश शक्ति के पूरे विकास को आप देखें, यह कितना सुन्दर है। अत: इस प्रकार हमारी इच्छा आत्मा बन जाती हैं, आपकी इच्छा और आत्मा में एकाकारिता हो जाती है। परन्तु बांई विशुद्धि की पकड़ की बाधा कभी-कभी अत्यन्त कष्टदायी हो जाती है। आप में से जिन लोगों को भी बांई विशुद्धि की पकड़ हो वे जब भी कठोर शब्द बोलें तो समझ लें कि वे नहीं बोल रहे हैं। नहीं, क्योंकि आप तो आत्मा हैं और आत्मा कभी कठोर या विनाशकारी शब्द नहीं बोल सकती। बहुत आवश्यकता पड़ने पर ही, सुधार करने के लिए, यह कभी थोड़े से कठोर शब्द कहेगी। परन्तु यह कार्य आपने नहीं करना, कोई अन्य शक्ति इस कार्य को करेगी।

परमात्मा आपको धन्य करें।